इतिहास

पाठ–1

यूरोप में राष्ट्रीयवाद का उदय

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद :–

आदर्शवादी राष्ट्रवाद, एक दूसरे के अनुसार, लडने के लिए तैयार रहते थे।

1. 1857 केबाद यूरोप के बाल्कन क्षेत्रा में तनाव आपसी भौगोलिक और जातीय भिन्नता स्लाव का नाम दिया गया। आटोमन साम्राज्य के नियंत्राण में राष्ट्रवाद के विचारों के फैसले से आटोमन साम्राज्य के विघटन का विस्फोट।
2. विभिन्न स्लाव राष्ट्रीय समूहों की पहचान, आपसी टकराव।
3. इसी समय यूरोपीय शक्तियों बीच व्यापार और उपनिवेशों के लिए प्रतिस्पर्धी और प्रथम विश्व युद्ध।
4. राष्ट्रवादी देशों में साम्राज्य विरोधी आंदोलन विकसित हुए समाजों का राष्ट्र राज्यों में गठित किया जाना।

1815 के बाद एक नया रूढ़िवाद :–

1. 1815 में नेपोलियन की हार के बाद यूरोपीय सरकारें रूढ़िवाद की भावना। राज्य और समाज की स्थापित पारंपरिक संस्थाए – राजतंत्रा, चर्च। सामाजिक ऊंच नीच सपेन्ति और परिवार को बनाए रखना।
2. 1815 में बिट्रेन, रूस प्रशा और आस्ट्रिया यूरोपीय शक्तियों ने नेपोलियन को हराया। 1815 की वियना संधि बूर्बो वंश को सत्ता ने बहाल किया।
3. 1815 में स्थापित रूढ़िवाद शासन व्यवस्थाएँ की निरकुंशता को खत्म किया। ज्यादातर सरकारों ने सेंसरशिप के नियम बनाए, फ्रांसीसी क्रांति से जुडे सिद्धांतों को अपनाया।

प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्रश्न 1. बाल्कन प्रदेशों में राष्ट्रवादी तनाव क्यों पनपा।

प्रश्न 2. 19वीं शताब्दी के तीसरे दशक में यूरोप में उदित और विकसित हुए राष्ट्रवाद का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. रूढ़िवाद से आप क्या समझते हो?

प्रश्न 4. नेपोलियन को कब और किस ने हराया?

प्रश्न 5. वियाना संधि क्या थी और इसके क्या उद्देश्य थे?

प्रश्न 6. 1815 में रूढ़िवाद शासन व्यवस्थाएँ किस प्रकार की थी?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ–3

भारत में राष्ट्रवाद

आंदोलन के भीतर अलग–2 धाराएँ।

1. ग्रामीण इलाकों में विद्रोह :.
   असहयोग आंदोलन का युद्ध के बाद गांवों में प्रसार, किसानों व आदिवासियों के संघर्ष का इस आंदोलन में समा जाना।
2. किसानों की स्थिति उनकी समस्याएँ क्या थी। उनका आंदोलन तालुकदारों और जगीरदारों के खिलाफ, जो भारी लगान और तरह – तरह के कर वसूल करते थे। किसानों से बेगार करवानी किसानों की मांग बेगार खत्म और दमनकारी जमीदारों का समाजिक बहिष्कार किया जाए।
3. अवध में किसान सभा का गठन (1920) में जवाहर लाल नेहरू ने अवध के गांवों का दौरा किया, 300 से ज्यादा शाखाएँ बन गई थी।
4. आदिवासी किसानों ने गांधी जी के संदेश का 'स्वराज' का अलग मतलब निकाला।
5. अंग्रेजों का मवेशियों का जंगल में न घुसने देना। बेगार करने का विद्रोह किया, अल्लूरी सीता राम रजू का व्यक्तित्व, बल प्रयोग के जरिए ही देश आज़ाद हो सकता है।

लोगों ने आंदोलन को कैसे लिया।

1. सिविल नाफ़रमानी या सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल विभिन्न समूह कौन से थे?
2. उन्होंने आंदोलन में हिस्सा क्यों लिया?
3. आदर्श क्या थे।
4. उनके लिए स्वराज के क्या मायने थे?

1. गांवों के संपन्न किसान :' व्यवसायिक फसलों की खेती करने के कारण व्यापार में मंदी और गिरती कीमतों से परेशान।
2. गरीब किसान :– केवल लगान में कमी ही नहीं चाहते थे बल्कि छोटे पट्टेदारों के लिए जमीन का किराया चुकाना भी मुश्किल हो गया।
3. व्यवसायी वर्ग :– विदेशी वस्तुओं के आयात से सुरक्षा चाहते थे और रूपया स्टर्लिंग विदेशी विनियम अनुपात में बदलाव चाहते थे जिससे आयात में कमी आ जाए।
4. औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने कहीं भी बहुत बडी संख्या में हिस्सा नही लिया कुछ मजदूरों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में हिस्सा लिया।
5. सिविल नाफ़रमानी आंदोलन में औरतों ने बडे पैमाने पर हिस्सा लिया, शहरी इलाकों में ज्यादातर ऊंची जातियों की महिलाएँ सक्रिय थी। ग्रामीण इलाकों में संपन्न किसान परिवारों की महिलाएँ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. बेगार किसे कहते है? इस प्रथा के विरूद्ध किस ने आंदोलन चलाया और उनके विचार क्या थे?
2. असहयोग आंदोलन के दौरान अल्लूरी सीता राम राजू एवं उसकी कार्यकलापों के विषय में एक टिप्पणी लिखिए।
3. सिविल नाफ़रमानी या सविनय अवज्ञा आंदोलन में किन किन समूहों ने भाग लिया और क्यों।
4. सविनय अवज्ञा आंदोलन में औरतों की क्या भूमिका थी? वर्णन कीजिए।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 4

भूमंडलीयकृत विश्व का बनना

सरांश – 1.3 विजय बीमारी और व्यापार

1. सोलहवीं सदी में यूरोपीय जहाज़ियों ने एशिया तक का रास्ता ढूँढने के बाद अमेरिका पहुंचे।
2. भारतीय उपमहाद्वीप, तरह तरह के सामान, ज्ञान और परंपरायों के अहम बिंदु थे।
3. खोज के बाद अमेरिका में बेहिसाब फसलें, खनिज और विशाल भूमि से जीवन का रूप रंग बदलने लगा।
4. पेरू और मैक्सिकों में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं ने यूरोप, की संपदा और पश्चिम एशिया के साथ व्यापार को बढ़ाया।
5. पूर्तगाली और स्पेनिश सेनाओं की विजय का सिलसिला शुरू, स्पेनिश लोगों द्वारा चेचक के कीटाणु का फैलाव और अमेरिका के लोगों के शरीर में रोग से लड़ने की प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी।

2.1 विश्व अर्थव्यवस्था का उदय – कार्न लॉ को समाप्त करना।

– ब्रिटेन में अनाज के आयात पर अनाज कानूनों द्वारा पाबंदी।

– कार्न लॉ के वापिस लेने के बाद कम कीमतों पर खाद्य पदार्थों का आयात।

– किसानों की हालत पर प्रभाव क्योंकि वे आयातित माल की कीमत का मुकाबला नहीं कर सकते थे। खेती बन्द हो गई।

– खाद्य पदार्थों की कीमतों में गिरावट आयी तो ब्रिटेन में उपभोग का स्तर बढ़ा।

– औद्योगिक प्रगति काफी तेज, आय में वृद्धि, अनाज ज्यादा मात्राा में आयात हुआ।

4.1 ब्रेटन वुडस संस्थान –

– विदेशी व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए ब्रेटन वुडस नामक स्थान पर जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशर में सम्मेलन।

– संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन।

– अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक की स्थापना।

– विश्व युद्ध के बाद पुननिर्माण के लिए पैसे जुटाना।

– विश्व बैंक और आई एम एफ को ब्रेटन वुडस ट्विन या जुडवाँ संतान का नाम दिया।

– अमेरिका को विश्व बैंक और आई एम एफ में वीटो की शक्ति।

4.3 – नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली – **N.I.E.O.**

– विकासशील देशों को अपने संसाधनों पर नियंत्राण मिले।

– विकास के लिए अधिक सहायता मिलें।

– कच्चे माल के सही दाम मिलें,

– तैयार माल को विकसित देशों के बाजारों में पहुँच मिले।

– **N.I.E.O.** के लिए आवाज उठाई और समूह जी–77 के रूप में संगठित हो गए जब पश्चिमी अर्थव्यवस्था से उन्हें कोई लाभ न मिला।

1. प्राक् आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भूभागों के उपनिवेशीकरण में किस प्रकार मदद दी?
2. कार्न लॉ को समाप्त करने का फैसला ब्रिटिश सरकार ने क्यों लिया?
3. ब्रेटन वुड्स समझौते का क्या अर्थ हैं? इस का क्या उद्देश्य था?
4. जी–77 क्या हैं? इसे ब्रेटन वुडस की संतानों की प्रतिक्रिया किस आधार पर कहा जा सकता हैं?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

औद्योगीकरण का युग

सरांश –

संरक्षण तटकर – आयात की जाने वाली वस्तुओं पर उनके आयात को रोकने के लिए तटकर का लगाना। घरेलू उद्योगों को संरक्षण देने के उद्देश्य से किया जाता है। संरक्षण तटकर के द्वारा घरेलू वस्तुओं को विदेशी वस्तुओं की प्रतियोगिता से बचाने के लिए और स्थानीय निर्माताओं के हितों की रक्षा करने के लिए।

– मुक्त व्यापार की नीति – अर्थशास्त्रियों का कहना है कि विकास की गति तीव्र करने के लिए वाणिज्यवाद या मुक्त व्यापार की नीति अपनाई जानी चाहिए। सरकार को उद्योग एवं व्यापार में या तो बिल्कुल भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए या फिर कम से कम हस्तक्षेप ही करना चाहिए। इस सिद्धांत को 1776 में ब्रिटेन के अर्थशास्त्री एड्म स्थिम ने पेश किया था।

– संरक्षण की नीति – नए उद्योगों को कठोर प्रतियोगिता से बचाने के लिए नीति को लागू करना।

– शाही प्राथमिकता – ब्रिटिश शासन काल में ब्रिटेन से भारत में आयात की जार रही वस्तुओं को विशेष सुविधाएँ एवं विशेषाधिकार प्रदान करना।

– चैंबर ऑफ कॉमर्स – सामूहिक चिंता के मुद्दों पर फैसला लेने और व्यवसाय ठीक तरह से चला सके 19वीं सदी में इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए चैंबर ऑफ कॉमर्स की स्थापना की गई। भारत में पहला चैंबर मद्रास में खोला गया।

– राष्ट्रवादी संदेश – भारतीय निर्माताओं के विज्ञापनों में राष्ट्रवादी संदेश साफ दिखाई देता था। उनका कहना था कि अगर राष्ट्र की परवाह करते हो तो उन चीजों को खरीदे जिन्हें, भारतीय ने बनाया हैं। विज्ञापन स्वदेशी वस्तुओं के राष्ट्रवादी संदेश के वाहक बन गये थे।

प्रश्न :–

1. ब्रिटेन ने संरक्षण तटकर नीति को अपनाना क्यों जरूरी समझा?
2. सरकार को उद्योग व व्यापार में दखल न देने के लिए अर्थशास्त्रियों ने किस नीति को अपनाने का सुझाव दिया?
3. आदि औद्योगिकरण से क्या अभिप्राय हैं?
4. चैंबर ऑफ कॉमर्स का पहला कार्यालय भारत में कहाँ स्थापित हुआ? इसकी स्थापना के पीछे एक प्रमुख उद्देश्य क्या था?
5. नये उपभोक्तों को लुभाने के लिए विज्ञापनों का क्या महत्त्व है। इन के द्वारा राष्ट्रवादी संदेश कैसे पहुंचाया जाता था?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

मुद्रण क्रांति और उसका असर

1. छापेखाने के आने से एक नया पाठक वर्ग पैदा हुआ, कीमत गिरी, पाठक वर्ग बृहतर होता गया।
2. पढ़ने की एक नयी संस्कृति विकसित हुई। पढ़कर सुनाए जाते थे। ज्ञान का मौखिक लेन देन, छपाई क्रांति से पहले किताबें महंगी, छापना भी असंभव।
3. किताबें सिर्फ साक्षर ही पढ़ सकते थे – साक्षरता की दर सीमित थी। लोगों में दिलचस्पी बढ़ी, मौखिक संस्कृति मुद्रित संस्कृति में दाखिल हुई, श्रोता और पाठक वर्ग का मेल मिलाप।

धार्मिक विवाद और प्रिंट का डर

1. छापेखाने से विचारों का प्रसार
2. लोगों का अलग–2 ढंग से सोचना, नए तरीको ने लोगों की जिंदगी बदली, सूचना और ज्ञान से, संस्था और सत्ता से उनका रिश्ता ही बदल दिया।
3. लोगों की छपी किताब के व्यापक प्रसार और छपे शब्दों की सुगमता को लेकर आशंका,भय,लोगों में बागी और आधार्मिक विचार पनपने लगे।
4. 'मूल्यवान' साहित्य की सत्ता ही नष्ट हो जायेगी। धर्मगुरूओं और सम्राटों, लेखकों, कलाकारों को चिंता धर्म के क्षेत्रा में मार्टिन लूथर का योगदान।
5. नया बौद्धिक माहौल बनाया, धर्म सुधार आंदोलन के नए विचारों के प्रसार में मदद मिली।

मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी □क्रांति :–

1. किताबों के जरिए प्रगति और ज्ञानोदय होता है। किताबें दुनिया बदल सकती है। निरकुंशवाद और आंतकी राजसत्ता का समाज को मुक्ति दिला सकती है।
2. विवेक और बुद्धि का राज, छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवार औज़ार।

क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां

1. छपाई के चलते ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों का प्रसार।
2. परंपरा अंधविश्वास और निरकुंशवाद की आलोचना विवेक का शासन, लेखन का व्यापक स्तर, एक नए आलोचनात्मक, सवालिया और तार्किक नजरिऐं से दुनियां देखना।
3. छपाई ने वाद–विवाद संवाद की नयी संस्कृति को जन्म दिया।
4. 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाले साहित्य का ढेर लग चुका था।
5. छपाई ने विचारों को फैलाने में मदद की, विचारों को स्वीकारते थे तो कुछ को

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

नकारते भी थे। इससे मानव को अलग ढंग से सोचने की संभावनाएँ बढ़ी।

उन्नीसवीं सदी में महिलाएँ :–

1. यूरोप में औरतों की शिक्षा में बहुत ज्यादा वृद्धि हुई। महिलाएँ पाठकों के रूप में। लेखकों के रूप में प्रसिद्ध हुई। पेनी पत्रिाकाएँ औरतों के लिए ही छपती थी औरतों को शिक्षा देती थी जैसे उचित व्यवहार और घर में रख–रखाव का कार्य इत्यादि।
2. बडी संख्या में उपन्यास लिखे जाने लगे तो गरीब महिलाएँ, मघ्यमवर्गीय महिलाएँ अच्छी उपन्यास लेखिका बनी जैसे जेन–आस्टिन, ब्राण्ट बहन, जार्ज एलियट नारी की नयी परिभाषा दी।

प्रश्न

1. मुद्रण क्रांति क्या थी?
2. अठारहवीं सदी के यूरोप में 'मुद्रण संस्कृति से निरकुंशवाद का अंत और ज्ञानोदय होगा। ऐसा लगता था क्यों?
3. कुछ लोग किताबों की छपाई से चिंतित क्यों थे? विवेचना कीजिए। यूरोप से कोई एक उदाहरण भी दीजिए।
4. मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में थे और उसने इसकी खुलेआम प्रशंसा की। कारण बताएं।
5. क्या कारण था कि रोमन कैथोलिक चर्च ने सोलहवी सदी के मध्य से प्रतिबैधित किताबों की सूची रखनी शुरू कर दी।
6. 19वीं शताब्दी के यूरोप में औरतों के साहित्य की बडी भारी वृद्धि हुई? यदि ऐसा हुआ तो संक्षेप में चर्चा कीजिए।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

भूगोल

पाठ – 1

संसाधन एवं विकास

सारांश :–

1. भारत में संसाधन नियोजन :– तीन सोपान –

(क) देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों की पहचान कर उनकी तालिका बनाना।

(ख) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी, कौशल और संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना।

(ग) संसाधन विकास योजनाओं और राष्ट्रीय विकास योजना में समन्वय स्थापित करना।

2. भारत में भू–उपयोग प्रारूप :– भारत का भौगोलिक क्षेत्राफल 32.8 लाख वर्ग कि.मी.।

– 93 प्रतिशत भाग के ही भू–उपयोग के आंकड़े उपलब्ध।

– असम को छोड़कर अन्य प्रांतों के सूचित क्षेत्रा के बारे में जानकारी नहीं।

– जम्मू और कश्मीर में पाकिस्तान और चीन अधिकृत क्षेत्राों के भूमि उपयोग का सर्वेक्षण नहीं हुआ।

– स्थाई चरागाहों के अंतर्गत भूमि में कमी आई।

– परती भूमि – जिस भूमि पर दो – तीन सालों में एक फसल ही ली जाती है।

– शुद्ध बोया गया क्षेत्रा – एक वर्ष में बोया गया कुल क्षेत्रा।

– पंजाब और हरियाणा में शुद्ध बोया गया क्षेत्रा सबसे अधिक।

– अरूणाचल प्रदेश मिजोरम, मणिपुर और अंडमान निकोबार में कम शुद्ध बोया गया क्षेत्रा।

– भारत में 54 प्रतिशत भाग पर खेती।

– भारत में राष्ट्रीय वन नीति 1952 में।

– बंजर भूमि–पहाड़ी चट्टानें, सूखी और मरूस्थलीय भूमि।

– गैर कृषि प्रयोजनों में बस्तियाँ, सड़के, रेल लाईन, उद्योग।

– भू–संसाधनों का निम्नीकरण – लंबे समय तक लगातार भूमि संरक्षण और प्रबंधान की अवहेलना करने एवं लगातार भू–उपयोग के कारण।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

1. संसाधन नियोजन के तीन सोपान कौन से है? विवेचना करें।
2. भारत में संपूर्ण भू–उपयोग के आंकडें उपलब्ध क्यों नहीं हैं?
3. स्थाई चरागाहों के अंतर्गत भूमि कम क्यों हो रही है?
4. शुद्ध बोया गया क्षेत्रा किसे कहते हैं? भारत के कौन से क्षेत्रा में शुद्ध बोया गया क्षेत्रा अधिक है?
5. बंजर भूमि में कौन सा क्षेत्रा आता है?
6. भू–संसाधनों के निम्नीकरण के मुख्य दो कारणों का विवरण दें।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 2
जल संसाधन

सारांश :–

1. प्राचीन भारत में जलीय कृतियाँ :–
– इलाहाबाद के नजदीक श्रिगविरा में गंगा नदी की बाढ के जल को सुरक्षित करने के लिए जल संग्रहण तंत्रा।
– चंद्रगुप्त मौर्य के समय बाँध, झील और सिंचाई तंत्राों का निर्माण।
– कलिंग, नागार्जुन कोडा, बेन्नुर और कोल्हापुर में सिंचाई तंत्रा।
– कृत्रिाम झील – भोपाल झील, 11वीं शताब्दी में बनाई गई।
इल्तुतमिश ने दिल्ली में सिरी फोर्ट क्षेत्रा में जल की सप्लाई के लिए हौज़ खास बनवाया।

2. बाँध :–बाँध बहते जल को रोकने, दिशा देने, बहाव कम करने के लिए खड़ी की गई बाधा है जो आमतौर पर जलाशय, झील अथवा जलभरण बनाती है।
– बाँधों का वर्गीकरण उनकी संरचना और उद्देश्य या ऊँचाई के अनुसार।
– संरचना और उनमें प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर बाँधों को लकड़ी के बाँध, तटबंध बाँध या पक्का बाँध में विभाजन।
– ऊँचाई के अनुसार बाँध को बड़े बाँध और मुख्य बाँध या नीचे बाँध, माध्यम बाँध और उच्च बाँधों में वर्गीकृत।

3. वर्षा जल संग्रहण :–
– पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्राों में लोगों ने गुल अथवा कुल जैसी वाहिकाएँ बनाई।
– गुल या कुल में नदी की धारा का रास्ता बदला जाता था। छत वर्षा जल संग्रहण करना।
– बाढ़ जल बाहिकाएँ बनाना। – गढ्ढ़े बनाना।
– राजस्थान के ज़िले जैसलमेर में खादीन और जोहड़ बनाना।
– टाँका या भूमिगत टैंक–पीने का पानी संग्रहित करने के लिए।
– बीकानेर, फलोदी और बाड़मेर में। – आकार एक कमरे जितना।
– छत का पानी पीने के लिए संग्रहित।
– वर्षा का पहला जल छत और नलों को साफ करने में उपयोग।
– वर्षा जल को पालर पानी कहना।
– टाँकों के साथ भूमिगत कमरे गर्मी से राहत देते थे।
– कुछ घरों में टाँका आज भी मौजूद क्योंकि नल के पानी का उन्हें स्वाद पसंद नहीं।
– गंडायूर गाँव में छत वर्षा जल संग्रहण

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

1. प्राचीन भारत में बनी जलीय कृतियों का विवरण दें।
2. बाँध किसे कहते हैं? बाँधों का वर्गीकरण किस आधार पर किया जाता हैं?
3. वर्षा जल संग्रहण के विभिन्न तरीके बताओ।
4. कुल या गुल भारत के किस हिस्से में प्रचलित थे?
5. राजस्थान में कौन से विभिन्न तरीकों से वर्षा जल संग्रहण होता है?
6. टाँका क्या है? यह कहाँ और क्यों बनाएँ जाते थे?
7. वर्षा का पहला जल क्यों एकत्रित नहीं किया जाता था?
8. टाँके के साथ भूमिगत कमरे क्यों बनाए जाते थे?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 3
कृषि

सारांश –

प्रौद्योगिकीय और संस्थागत सुधार :–

– स्वतंत्राता के पश्चात देश में संस्थागत सुधर करने के लिए जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा जमींदारी आदि समाप्त करने को प्राथमिकता दी गई।

– प्रथम पंचवर्षीय योजना में भूमि सुधार मुख्य लक्ष्य।

– पैकेज टैक्नोलॉजी पर आधारित हरित क्रांति और श्वेत क्रांति।

– विकास कुछ क्षेत्राों तक सीमित।

– 1980 और 1990 के दशकों में व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम शुरू जो संस्थागत और तकनीकी सुधारों पर आधारित था।

– सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग तथा बीमारी के लिए फसल बीमा के प्रावधान।

– किसानों को कम दर पर ऋण सुविधाएँ प्रदान करने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों और बैंकों की स्थापना।

– किसान क्रेडिट कार्ड और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना शुरू।

– आकाशबाणी और दूरदर्शन पर किसानों के लिए मौसम की जानकारी के बुलेटिन और कृषि कार्यक्रम प्रसारित करना।

– किसानों को बिचौलियों और दलालों के शोषण से बचाने के लिए न्यूनतम सहायता मूल्य और कुछ महत्वपूर्ण फसलों के लाभदायक खरीद मूल्यों की सरकार घोषणा करती है।

कृषि का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, रोजगार और उत्पादन में योगदान :–

सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान। – जन संख्या के लिए योगदान।

– आजीविका का साधन – भारत सरकार ने आधुनिकीकरण के लिए भरसक प्रयास

– भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना।

– पशु चिकित्सा सेवाएँ और पशु प्रजनन केन्द्र की स्थापना। – बागवानी विकास।

– मौसम विज्ञान और मौसम के पूर्वानुमान के क्षेत्रा में अनुसंधान और विकास।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. कृषि में कौन से प्रौद्योगिकीय और संस्थागत सुधार किए गए हैं?
2. पैकेज टैक्नोलॉजी क्या है?
3. सरकार किसानों को फसल बीमा क्यों देती है?
4. भारत में कृषि का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान क्या है?
5. भारतीय कृषि को किस प्रकार आधुनिक बनाया जा सकता है?
6. किसानों के लिए टेलीविजन और रेडियों पर मौसम संबंधी जानकारी देने के पीछे क्या उद्देश्य है?
7. जोतों की चकबंदी का क्या अर्थ है? इस की जरूरत क्यों पडी?
8. सरकार किसानों के लिए न्यूनतम सहायकता मूल्य क्यों निर्धारित करती है?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 4
खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

सारांश

1. खनिजों की उपलब्धता :–

समान्यता खनिज अयस्कों में पाये जाते हैं। खनन का आर्थिक महत्व तभी है जब अयस्क में खनिजों का संचयन पर्याप्त मात्राा में हो। खनिज

प्रायः शैल समूहों से प्राप्त होते हैं।

– आग्नेय तथा कायांतरित चट्टानों में खनिज दरारों, जोड़ों, भ्रंशों

व शिराओं में मिलते हैं?

मुख्य धात्विक खनिज जैसे – जस्ता, तांबा, जिंक और सीसा आदि इसी तरह शिराओं व जमावों के रूप में प्राप्त होते हैं।

– अनेक खनिज अवसादी चट्टानों के अनेक खनिज संस्तरों या परतों में पाए जाते हैं। इनका निर्माण क्षैतिज परतों में निक्षेपण, संचयन व जमाव का परिणाम हैं। कोयला तथा लौह अयस्कों लम्बी अवधि ा तक अत्यधिक उष्मा दबाव का परिणाम है।

– धरातनीय चट्टानों का अपघटन :– चट्टानों के घुलनशील तत्वों के अपरदन के पश्चात् अयस्क वाली अवशिष्ट चट्टाने रह जाती है। बॉक्साइट का निर्माण इसी प्रकार होता है।

– पहाडियों के आधार तथा घाटी के रेते में 'प्लेसर निक्षेप' सोना, चाँदी, टिन व प्लेटिनम।

– महासागरीय जल में खनिज व्यापक वितरित आर्थिक सार्थकता कम है। नमक, मैगनीशिम तथा ब्रोमाइन, मैगनीज।

2. भारत में लौह अयस्क की पेटियाँ :–

– उडीसा – झारखंड पेटी :– हेमेटाईट किस्म का लौह अयस्क म्यूरभंज व केछुंझर जिलों में , झारखंड के सिंहभूम जिले में गुआ तथा नोआमुंडी में।

– दुर्ग–बस्तर–चन्द्रपुर पेटी :– छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में बेलाडिला में हेमेटाइट पाया जाता है, इस्पात बनाने के गुण।

– बेलारी – चित्रादूर्ग, चिकमगलूर–तुमकुर पेटी : कर्नाटक में पश्चिमीघाट में अवस्थित कुद्रेमुख।

– महाराष्ट्र– गोआ पेटी :– रत्नागिरी जिले में स्थित है। मार्मागुआ से निर्यात होता है।

3. ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण :– आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा एक आधारभूत आवश्यकता। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में प्रत्येक क्षेत्रा कृषि उद्योग, परिवहन, वाणिज्य व घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऊर्जा निवेश की आवश्यकता हमें ऊर्जा के सीमित संसाधनों को उपयोग न्यायसंगत से करना है?

– निजी वाहन की अपेक्षा सार्वजनिक वाहनों का उपयोग।

– जब प्रयोग न हो रही हो तो बिजली बन्द करें।

– गैर परांपरिक ऊर्जा संसाधनों का प्रयोग।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें :–

1. कौन सा खनिज अपक्षयित पदार्थ के अवशिष्ट भार को त्यागता हुआ चट्टानों के अपघटन से बनता है।

2. किस चट्टान के स्तरों में खनिजों का निक्षेपण और संचयन होता है?

3. मोनाजाइट रेत में कौन सा खनिज पाया जाता हैं?

4. आग्नेय तथा कायातरित चट्टानों में खनिजों का निर्माण कैसे होता है?

5. भारत में कोयले तथा लौहे के वितरण का वर्णन करें।

6. संसाधनों का संरक्षण क्यों जरूरी है?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

विनिर्माण उद्योग

सारांश :–

1. विनिर्माण का महत्व :–

विनिर्माण उद्योग सामान्यतः विकास तथा आर्थिक विकास की रीढ समझे जाते है।

– कृषि के आधुनिकीकरण में सहायक

– कृषि में रोजगार की निर्भरता कम करता है।

– गरीबी तथा बेरोज़गारी उन्मूलन में सहायक

– क्षेत्रीय असमानताओं को कम करते हैं।

– वाणिज्य व्यापार को बढावा।

– विकसित देश बनाने में सहायक

2. लोहा तथा इस्पात उद्योग :–

एक आधारभूत उद्योग सभी भारी, हल्के, माध्यम उद्योग इनसे बनी मशीनरी पर निर्भर है। इस्पात के उत्पादन तथा खपत को प्रायः एक देश के विकास का पैमाना माना जाता है। इस उद्योग के लिए कच्चा माल लौह अयस्क कोकिंग कोल तथा चूना पत्थर का अनुपात 4:2:1: है। कठोर बनाने के लिए मैगनीज़ की आवश्यकता है। निर्मित माल को बाज़ार तक पहुँचाने के लिए सक्षम परिवहन की आवश्यकता है। सार्वजनिक क्षेत्रा के सभी उपक्रम अपने इस्पात को स्टील अथरिटी ऑफ इंडिया (**SAIL**) जबकि टिस्को **TISCO** टाटा स्टील के नाम से उत्पाद को बेचती है। लोहा इस्पात उद्योग का पूर्ण समान्य का विकास नहीं कर पायें जिसके निम्नलिखित कारण है।

– उच्च्य लागत तथा कोकिंग कोयले की सिमित उपलब्धता

– कम श्रमिक उत्पादकता

– ऊर्जा की अनियमित अपूर्ति

– अविकसित अवसंरचना

3. औद्योगिक प्रदूषण तथा पर्यावरण निम्नीकरण

यद्यपि उद्योगों की हमारी अर्थ व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है पर यह प्रदूषण को भी बढावा देते है।

– वायु प्रदूषण :– अधिक अनुपात में गैसों की उपस्थिति सल्फर डाइऑक्साइड तथा कार्बन मोनोऑक्साइड वायु प्रदूषण का कारण है। वायु में निलंबित कणनुमा पदार्थ, घूले, स्प्रे, कुहासा तथा धुआँ। वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य पशुओं पौधों, इमारत तथा पूरे पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डालती है।

– जल–प्रदूषण उद्योगों द्वारा कार्बनिक तथा अकार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों के नदी में छोडने से जल प्रदूषण फैलता है। कुछ उद्योग है जो रंग अपमार्जक अम्ल, लवण तथा भारी धातुएँ, कृत्रिम रसायन आदि जल में वांछित करते है।

– तापीय प्रदूषण :– परमाणु ऊर्जा संयत्रों के अपशिष्ट व परमाणु शस्त्रा उत्पादक

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

कारखानों से केंसर जन्मजात विकार तथा अकाल प्रसव जैसी बिमारियां होती है।

– ध्वनि प्रदूषण :– ध्वनि प्रदूषण से खिन्नता तथा उत्तेजना ही नही बरन् श्रवण असक्षमता, हदयगति, रक्तचाप तथा अन्य कायिक व्यथाएँ भी बढती है।

4. पर्यावरणीय निम्नीकरण की रोकथाम :–

– जल को दो या अधिक अवस्थाओं में पुनचर्क्रण द्वारा पुनः उपयोग।

– पदार्थों को प्रवाछित करने से पहले उनका शोधन करें जिस के तीन चरण :–

(i) यांत्रिाक साधनों द्वारा प्राथमिक शोधन

(ii) जैविक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीयक शोधन

(iii) जैविक, रसायनिक तथ भौतिक द्वारा तृतियक शोधन

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

1. देश के आर्थिक विकास में उद्योगों का क्या योगदान है। विवेचना करें।
2. लोहा इस्पात उद्योग को आधारभूत उद्योग क्यों कहा जाता है?
3. लोहा इस्पात उद्योग में कौन सा कच्चा माल प्रयोग होता है?
4. पर्यावरणीय निम्नीकरण में औद्योगिक विकास किस प्रकार बढावा देता है अलोचनात्मक विवेचना करें।
5. पर्यावरण निम्नीकरण को कम करने के सुझाव दें।
6. कौन सी ऐजेंसी सार्वजनिक क्षेत्रा में स्टील को बाज़ार उपलब्ध करती है।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 6

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

सारांश

1. स्थल परिवहन :– भारत विश्व के सर्वाधिक सड़क जाल वाले देशों में से एक हैं सडक मार्ग निम्न कारणों में से अधिक महत्वपूर्ण है।

– रेल की अपेक्षा निर्माण लागत कम है।

– उबड खाबड भागों पर भी सड़के बनाई जा सकती हैं।

– अधिक ढाल प्रवणता में सड़के निर्मित की जा सकती है।

– काम दूरी, कम वस्तुओं, कम व्यक्तियों के परिवहन में मतव्ययी।

– घर पर सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है।

– अन्य परिवहन के साधनों में एक कडी के रूप में।

स्वर्णिम चतुर्भुज महाराजमार्ग :– भारत सरकार ने दिल्ली–कोलकता, चेन्नई, मुंबई व दिल्ली को जोडने वाली 6 लेन वाली महाराजमार्ग की परियोजना आरम्भ की है। इस परियोजना में दो गलियारे प्रस्तावित है। उत्तर दक्षिण गलियारा जो श्री नगर को कन्याकुमारी से जोड़ता है। पूर्व–पश्चिम गलियारा जो सिलचर (असम) तथा पोरबंदर (गुजरात) को जोड़ता है।

2. रेल परिवहन :– भारत में रेल परिवहन वस्तुओं तथा यात्रियों के परिवहन का प्रमुख साध ान है भारत में रेल परिवहन के

वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में भू–आकृतिक, आर्थिक व प्रशासकीय कारक प्रमुख।

– उत्तरी मैदानों में रेल परिवहन का विकास हुआ है। नदियों पर पुलों के निर्माण में कुछ कठिनायां आई है।

– हिमालय पर्वतीय क्षेत्रा भी दुर्लभ उच्चावचविरल जनसंख्या रेलवे लाइन के निर्माण में प्रतिकुल परिस्थितियां पैदा करती है।

3. पाइप लाईन :– भारत के परिवहन मानचित्रा पर पाइपलाईन एक नया परिवहन का साध ान है। इसका प्रयोग कच्चा तेल, पैट्रोल उत्पाद तथा तेल से प्राप्त उत्पाद तथा गैस परिवहन के काम आता है। पाईपलाईन बिछाने की आरंभिक लागत अधिक है। लेकिन चलाने की लागत न्यूनतम है। देश में पाईपलाईन के तीन प्रमुख जाल है।

– असम के तेल क्षेत्राों से गुवाहटी, बरौनी व इलाहाबाद से कानपुर तक।

– गुजरात में सलाया से वीरम गांव, मथुरा, दिल्ली, पंजाब में जालन्धर तक।

– गुजरात में हजीरा को उत्तरप्रदेश में जगदीशपुर तक मिलाती है।

4. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार :– देशों के बीच वस्तुओं का आदान प्रदान अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

कहलाता है यह राष्ट्र का आर्थिक बैरोमीटर है।

– आयात तथा निर्यात व्यापार के घटक है। अगर

– निर्यात मूल्य आयात मूल्य से अधिक हो तो उसे अनुकूल व्यापार सन्तुलन कहते है।

– निर्यात की अपेक्षा अधिक आयात असंतुलित व्यापार।

5. पर्यटन एक व्यापार के रूप में :– भारत में पर्यटन उद्योग में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

– पर्यटन राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करता है।

– स्थानीय हस्तकला तथा सांस्कृतिक उद्यमों को बढ़ावा।

– सांस्कृतिक विरासत की समझ विकसित करने में सहायक।

– पर्यटन उद्योग विकास का एक उज्जवल भविष्य है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

1. सड़क मार्ग रेलमार्ग से अधिक महत्वपूर्ण विवेचना करें।
2. महाराजमार्ग का आर्थिक विकास में क्या योगदान है?
3. रेलजाल को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना करें।
4. पाईप लाईन की क्या लाभ तथा क्या हानियां हैं?
5. भारत में तीन प्रमुख पाईप जालों का वर्णन करें।
6. व्यापार संतुलन से आप का क्या अभिप्राय है भारत के संदर्भ में व्याख्या करें।
7. भारत में पर्यटन उद्योग को बढावा देने के लिए प्रमुख सुझाव दें।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

नागरिक शास्त्रा

पाठ – 1

सत्ता की साझेदारी

सारांश

सत्ता की सांझेदारी :–

– सत्ता का बंटवारा जरूरी है क्योंकि इससे विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव का अंदेशा कम हो जाता है।

– सामाजिक टकराव आगे बढ़कर अक्सर हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का रूप ले लेता है इसलिए सत्ता में हिस्सा दे देना राजनीतिक व्यवस्था के स्भायित्व के लिए अच्छा है।

– लोकतंत्रा का मतलब ही होता है कि जो लोग इस शासन–व्यवस्था के अंतर्गत हैं उनके बीच सत्ता को बांटा जाए और इसलिए वैध सरकार वही है जिसमें अपनी भागीदारी के माध्यम से सभी समूह शासन व्यवस्था से जुड़ते हैं।

– लोकतंत्रा का एक बुनियादी सिद्धांत है कि जनता ही सारी राजनीतिक शक्ति का स्रोत है। इसमें लोग स्व–शासन की संस्थाओं के माध्यम से अपना शासन चलाते हैं।

– शासन के विभिन्न अंग है जैसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच सत्ता का बंटवारा रहता है।

– सरकार के बीच भी विभिन्न स्तरों पर सत्ता का बंटवारा। केन्द्र सरकार और राज्य सरकार और सत्ता बंटवारा विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच।

प्रश्न

1. सत्ता की साझेदारी का क्या अर्थ है?
2. सरकार के अलग–अलग अंग कौन से हैं?
3. देश में सत्ता की सांझेदारी की क्या आवश्यकता है?
4. बहुसंख्यकवाद का क्या अर्थ है?
5. आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में सत्ता की सांझेदारी के अलग–अलग तरीके क्या हैं? इनमें से प्रत्येक का एक उदाहरण भी दें।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 2
संघवाद

संघीय व्यवस्था

– यहाँ सरकार दो या अधिक स्तरों वाली होती है।

– अलग–अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं पर कानून बनाने, कर वसूलने और प्रशासन का उनका अपना–अपना अधिकार क्षेत्रा होता है।

– विभिन्न स्तरों की सरकारों के अधिकार क्षेत्रा संविधान में स्पष्ट रूप से वर्णित होते हैं।

– संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार अकेले नहीं बदल सकती।

– अदालतों को संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकार है।

– केन्द्र और विभिन्न राज्य सरकारों के बीच सत्ता का बँटवारा हर संघीय सरकार में अलग–अलग किस्म का होता है।

– पहला तरीका है दो या अधिक स्वतंत्रा राष्ट्रों को साथ लाकर एक बड़ी इकाई गठित करने का।

– संघीय शासन व्यवस्था के गठन का दूसरा तरीका है बड़े देश द्वारा अपनी आंतरिक विविधता को ध्यान में रखते हुए राज्यों का गठन करना और फिर राज्य और राष्ट्रीय सरकार के बीच सत्ता का बँटवारा कर देना।

भारत में संघीय व्यवस्था

– संविधान ने मौलिक रूप से दो स्तरीय शासन व्यवस्था का प्रावधान किया था संघ सरकार और राज्य सरकारें। केन्द्र सरकार को पूरे भारतीय संघ का प्रतिनिधित्व करना था। बाद में पंचायत और नगरपालिकाओं के रूप में संघीय शासन का एक तीसरा स्तर भी जोड़ा गया।

– भारत में संघीय शासन व्यवस्थाओं के अपने अलग–अलग अधिकार क्षेत्रा है।

– संघ सूची – प्रतिरक्षा, विदेशी, बैंकिग, संचार और मुद्रा।

– राज्य सूची – पूलिस, व्यापार, कृषि और सिंचाई।

– समवर्ती सूची – विवाह, गोद लेना, शिक्षा, वन।

– बाकी बचे – कंप्यूटर साफ्टवेयर

– भारत में जम्मू–कश्मीर एकमात्रा ऐसा राज्य है जिसका अपना संविधान है।

भारत में विकेंद्रीकरण

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

– जब केन्द्र और राज्य सरकार से शक्तियां लेकर स्थानीय सरकारों को दी जाती हैं तो इसे सत्ता का विकेंद्रीकरण कहते हैं।

– स्थानीय स्तर पर लोगों को फैसलों में सीधे भागीदार बनाना भी संभव हो जाता है।

– स्थानीय सरकारों को संवैधानिक दर्जा किए जाने से हमारे यहाँ लोकतंत्रा की जड़ें और मजबूत हुई है।

– इससे महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के साथ ही हमारे लोकतंत्रा में उनकी आवाज को मजबूत किया है।

प्रश्न

1. संघवाद का क्या अर्थ है?
2. अधिकार क्षेत्रा का क्या अर्थ है?
3. हमारे देश में कानून बनाने से संबंधित कितनी सूचियाँ हैं?
4. विकेंद्रीकरण का क्या अर्थ है?
5. शासन के संघीय तथा एकात्मक स्वरूपों में क्या–क्या मुख्य अंतर हैं? इसे उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करें।
6. संघवाद में किस आधार पर केन्द्र तथा राज्य सरकारों के बीच शक्तियों को बँटवारा हुआ है?
7. संघीय सरकार की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 3
लोकतंत्रा और विविधता

सारांश

समानताएँ, असमानताएँ और विभाजन

समाजिक भेदभाव की उत्पत्ति – जन्म के आधार पर – चमड़ी के आधार पर

सामाजिक विभाजनों की राजनीति

- – लोकतंत्रा में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के बीच प्रतिद्वंद्विता का माहौल होता है। इस प्रतिद्वंद्विता के कारण कोई भी समाज फूट का शिकार बन सकता है।
- – राजनीतिक दल समाज में मौजूद विभाजनों के हिसाब से राजनीतिक होड़ करने लगे तो इससे सामाजिक विभाजन राजनीतिक विभाजन में बदल सकता है और ऐसे में देश विखंडन की तरफ जा सकता है।
- – सर्वश्रेष्ठ स्थिति तो यह कि समाज में किसी किस्म का विभजन ही न हो। अगर किसी देश में सामाजिक विभाजन है तो उसे राजनीति में अभिव्यकत ही नही होने देना चाहिए।
- – अधिकतर देशों में मतदान के स्वरूप और सामाजिक विभाजनों के बीच एक प्रत्यक्ष संबंध दिखाई देता है।
- – किसी देश में सामाजिक विभिन्नताओं पर जोर देने की बात को हमेशा खतरा मानकर नहीं चलना चाहिए। यह एक स्वस्थ राजनीति का लक्षण भी हो सकता है।
- – राजनीति में विभिन्न तरह के सामाजिक विभाजनों की अभिव्यक्ति ऐसे विभाजनों के बीच संतुलन पैदा करने का काम भी करती हैं।

प्रश्न :–

1. सामाजिक अंतर कब और कैसे सामाजिक विभाजनों का रूप ले लेते हैं?
2. सामाजिक विभाजन तथा राजनीति किस प्रकार अंतर्सबंधित है? व्याख्या करें।
3. किस प्रकार सामाजिक अंतरों से लोकतंत्रा सुदृढ़ होता है?
4. सामाजिक विभाजनों की राजनीति के परिणाम तय करने वाले तीन कारकों की चर्चा करें।
5. सामाजिक विभाजन किस तरह से राजनीति को प्रभावित करते हैं? दो उदाहरण भी दीजिए?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 4

जाति, धर्म और लैंगिक मसले

सारांश

निजी और सार्वजनिक विभाजन

- श्रम के लैंगिक विभाजन अधिकतर महिलाएँ अपने घरेलू काम के अतिरिक्त अपनी आमदनी के लिए कुछ न कुछ काम करती हैं लेकिन उनके काम को ज्यादा मूल्यवान नहीं माना जाता और उन्हें दिन रात काम करके भी उसका श्रेय नहीं मिलता।
- मनुष्य जाति की आबादी में औरतों का हिस्सा आधा है पर सार्वजनिक जीवन में खासकर राजनीति में उनकी भूमिका नगण्य ही है।
- विभिन्न देशें में महिलाओं को वोट का अधिकार प्रदान करने के लिए आंदोलन हुए। इन आंदोलनों में महिलाओं के राजनीतिक और वैघानिक दर्जे को ऊँचा उठाने और उनके लिए शिक्षा तथा रोजगार के अवसर बढ़ाने की माँग की गई मूलगामी बदलाव की माँग करने वाली महिला आंदोलनों ने औरतों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में भी बराबरी की माँग उठाई। इन आंदोलनों को नारीवादी आंदोलन कहा जाता है।

पितृ प्रधान समाज – पुरूष प्रधान समाज है दिन प्रति महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है इसके बावजूद महिलाएँ अभी पीछे हैं। इसलिए हमारे समाज को पितृ प्रधन समाज माना जाता है।

- साक्षरता दर के आधार पर
- ऊँची तनख्वाह वाले और ऊँचे पदों पर पहुँचने वाली महिलाओं की संख्या कम है।
- महिलाओं के घर के काम को मूल्यवान नहीं माना जाता।
- पुरूषों की तुलना में कम मजदूरी
- लड़की को जन्म लेने से पहले ही खत्म कर देना।
- महिलाओं के उत्पीड़न, शोषण और उन पर होने वाली हिंसा।

धर्म और सांप्रदायिकता और राजनीति

- लैंगिक विभाजन के विपरीत धार्मिक विभाजन के विपरीत धार्मिक विभाजन अक्सर राजनीति के मैदान में अभिव्यकत होता है।
- जब एक धर्म के विचारों को दूसरे से श्रेष्ठ माना जाने लगता है और कोई एक ध ाार्मिक समूह अपनी माँगों को दूसरे समूह के विरोध में खड़ा करने लगता है। इस प्रक्रिया में जब राज्य अपनी सत्ता का इस्तेमाल किसी एक धर्म के पक्ष में करने लगता है तो स्थिति और विकट होने लगती है। राजनीति से धर्म और इस तरह जोड़ना ही सांप्रदायिकता है।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

सांप्रदायिकता के रूप

- एक धर्म को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानना।
- अलग राजनीतिक इकाई बनाने की इच्छा।
- धर्म के पवित्रा प्रतिकों, धर्मगुरूओं की भावनात्मक अपीलों का प्रयोग।
- संप्रदाय के आधार पर हिसां, दंगा और नरसंहार

धर्मनिरपेक्ष शासन

- भारत का संविधान किसी धर्म को विशेष दर्जा नहीं देता।
- किसी भी धर्म का पालन करने और प्रचार करने की आजादी।
- धर्म के आधार पर किए जाने वाले किसी तरह के भेदभाव को अवैधानिक घोषित।
- शासन को धार्मिक मामलों में दखल देने का अधिकार
- संविधान में किसी भी तरह के जातिगत भेदभाव का निषेध किया गया है।

राजनीति में जाति

- चुनाव क्षेत्रा के मतदाताओं की जातियों का हिसाब ध्यान में रखना
- समर्थन हासिल करने के लिए जातिगत भावनाओं को उकसाना।
- देश के किसी भी एक संसदीय चुनाव क्षेत्रा में किसी एक जाति के लोागं का बहुमत नहीं है।
- कोई भी पार्टी किसी एक जाति या समुदाय के सभी लोगों का वोट हासिल नहीं कर सकती।

प्रश्न

1. लैंगिक विभाजन का क्या अर्थ है?
2. नारीवाद का क्या अर्थ हैं?
3. सांप्रदायिक राजनीति का क्या अर्थ है?
4. किन्हीं दो प्रावधानों का जिक्र करें जो भारत को धर्म निरपेक्ष बनाते है।
5. लैंगिक श्रम विभाजन का क्या अर्थ है?
6. विभिन्न तरह की सांप्रदायिक राजनीति का ब्यौरा दें और सबके साथ एक – एक उदाहरण भी दें।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 5
जन संघर्ष और आंदोलन

नेपाल में लोकतंत्रा की स्थापना

लोकतंत्रा का अर्थ :–लोकतंत्रा लोगों का लोगों के लिए और लोगों द्वरा चुनी गई सरकारहै।

नेपाल में उठे आंदोलन का उद्‌देश्य :– राजा को अपने आदेशों को वापस लेने क`लिए बाध्य करना जिन आदेशों के द्‌वारा राजा ने लोकतंत्रा को समाप्त कर दिया था।

नेपाल में लोकतंत्रा की स्थापना :–

– नेपाल में लोकतंत्रा 1990 के दशक में कायम हुआ।
– राजा वीरेन्द्र ने स्वीकार लिया।
– राजा वीरेन्द्र की हत्या के बाद राजा ज्ञानेंद्र ने लोकतंत्रा को स्वीकार नहीं किया।
– जनता द्वारा निर्वाचित सरकार को भंग कर दिया गया।
– 2006 में जो आंदोलन चला उसका लक्ष्य शासन की बागडोर राजा के हाथ में लेकर दोबारा जनता के हाथों में सौंपना मतलब लोकतंत्रा की स्थापना। संसद की बड़ी राजनीतिक पार्टियों ने मिलकर एक सेवेनपार्टी अलायंस बनाया और नेपाल की राजधानी काठमांडू में चार दिन के बंद का ऐलान किया।
– 21 अप्रैल के दिन आंदोलनकारियों ने राजा को अल्टीमेटम दे दिया। 24 अप्रैल 2006 अल्टीमेटम का अंतिम दिन था इस दिन राजा तीनों माँगों को मानने के लिए बाध्य हुआ।
– एस.पी.ए. ने गिरिजा प्रसाद कोठराला को अंतरिम सरकार का प्रधानमंत्री चुना। राजा कीशक्तियाँवापसले ली गई । इस संघर्ष को नेपाल का लोकतंत्रा के लिए दूसरा संघर्ष कहा गया।

प्रश्नों के उत्तर दें।

1. सेवेन पार्टी अलायंस क्या था? 2. नेपाल के लोगों की मुख्य माँगे क्या थी?
3. नेपाल के आंदोलन का मुख्य उद्‌देश्य क्या था?
4. आंदोलनकारियों ने राजा को अल्टीमेटम कब दिया?
5. नेपाल में लोकतंत्रा की स्थापना कैसे हुई।

वर्ग विशेष के हित समूह और जन सामान्य के हित समूह :–

हित समूह का अर्थ :– समाज के किसी खास हिस्से अथवा समूह के हितों को बढावा देना।

वर्ग–विशेष :– ये समाज के किसी खास तबके मसलन मजदूर, कर्मचारी, व्यवसायी, उद्योगपति, धर्म विशेष के अनुयायी अथवा किसी खास जाति का प्रतिनिधित्व करते है।

विशेषता :– ये पूरे समाज का नहीं बल्कि अपने सदस्यों की बेहतरी के लिए कार्य करतेहै।

जन सामान्य के हित समूह :– ऐसे संगठन किसी खास हित के बजाय सामूहिक हित का प्रतिनिधित्व करते हैं।

– अपने हितों की बजाय सामूहिक हितों का ध्यान रखना
– उदाहरण के लिए :– बामसेफ – बैकवर्ड एंड मायनॉरिटी कम्यूनिटी एम्पलाइज फेडरेशन।

प्रश्न

1. वर्गविशेषी हित समूह और जन सामान्य हित समूह में क्या अंतर है?
2. जन सामान्य हित समूह की एक उदाहरण दो।
3. लोक कल्याणकारी समूह किसे कहते हैं?
4. दबाव–समूह और आंदोलन राजनीति को किस तरह प्रभावित करते हैं।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ : 6

राजनीतिक दल

अर्थ :–राजनीतिक दल की लोगों के एक ऐसे संगठित समूह के रूप में समझा जा सकता है जो चुनाव लड़ने और राजनीतिक सत्ता हासिल करने, जनमत का निर्माण करने का कार्य करते हैं।

1. जनमत निर्माण में राजनीतिक दलों की भूमिका :–

अर्थ :– लोगों का मत्त उनकी राय।

– राजनीतिक दल लोगों में कहे मुद्दों को उठाते हैं।
– राजनीतिक दल लोगों को सरकार की नीतियों के बारे में बताते हैं।
– सरकार के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार देते है।
– नए कानून जो सरकार द्वारा बनाऐ जा रहे हैं उनके बारे में अपनी राय देते हैं। इस प्रकार राजनीतिक दल जनमत के निर्माण में अपनी भूमिका अदा करते हैं उससे लोगों के मन में सरकार के प्रति उसके पक्ष में और विपक्ष में विचार पैदा होते हैं और सही लोकतांत्रिाक सरकार की स्थापना होती है।

राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियाँ :–

आम करके लोग इस बात से नाराज रहते हैं कि राजनीतक दल अपना काम ठीक ढंग से नहीं करते। जनता हमेशा राजनीतिक दलों की आलोचना करती हैं। राजनीतिक दलों को अपना काम प्रभावी ढंग से चलाने के लिए कड़ी चुनौतियों का सामना करना पडता है।

2. पार्टी के भीतर आंतरिक लोकतंत्रा का न होना।

1. सारी ताकत कुछ नेताओं के हाथों में सिमट जाती है।
2. पार्टी के बीच आंतरिक चुनाव भी नहीं होते।
3. पार्टी के नाम पर सारे फैसले लेने का अधिकार उस पार्टी के नेता हथिया लेते है।

वंशवाद की चुनौती :–

1. राजनीतिक दलों के नेता अनुचित लाभ लेते हुए अपने नजदीकी लोगों और यहाँ तक कि अपने ही परिवार के लोगों को आगे बढ़ाते है।

पैसा और अपराधी तत्वों की बढ़ती घुसपैठ :– आम करके पार्टी उसी उमीदवार को टिकट देती है जिसके पास पैसा होता है क्योंकि चुनाव में बहुत पैसा खर्च होता है। यह नहीं देखा जाता कि वो व्यक्ति अपराधी तो नहीं।

पार्टियों के बीच विकल्पहीनता की स्थिति :– विभिन्न पार्टियों की नीतियों और कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण अंतर ही सार्थक विकल्प है।

1. आजकल दलों के बीच वैचारिक अंतर कम होता है।
2. हमारे देश में भी सभी बड़ी पार्टियों के बीच आर्थिक मामलों पर बड़ा कम अंतर रह गया है।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

3. जो लोग इससे अलग नीतियाँ चाहते है उनके लिए कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है।
अच्छे नेताओं की कमी :–

3. दलों को सुधारने के तरीके या उपाय :–

– विधायकों और सांसदों को दल–बदल करने से रोकने के लिए संविधान में संशोधन किया गया है।

– उच्च न्यायालय ने पैसे और अपराधियों का प्रभाव कम करने के लिए एक आदेश जारी किया है।

– अपनी संपति और अपराधिक मामलों का ब्यौरा एक शपथपत्रा के माध्यम से देना अनिवार्य कर दिया गया है।

– चुनाव आयोग के एक आदेश के जरिए सांगठनिक चुनाव कराना और आयकर का रिटर्न भरना।

– राजनीतिक दलों के आंतरिक कामकाज को व्यवस्थित करने के लिए कानून बनाया गया है?

– चुनाव का खर्च सरकार उठाए ताकि गरीब व्यक्ति भी चुनाव में खड़ा हो सके।

प्रश्न :–

1. जनमत शब्द का क्या अर्थ है?
2. जनमत निर्माण में राजनीतिक दलों की भूमिका का वर्णन करो।
3. शासक दल किसे कहते हैं?
4. दल–बदल किसे कहते हैं?
5. शपथपत्रा किसे कहते हैं?
6. राजनीतिक दलों के सामने क्या चुनौतियाँ हैं?
7. राजनीतिक दलों का कार्य सुचारू रूप से चलाने के सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गऐ हैं?
8. किसी भी राजनीतिक दल के दो गुण बताओ।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 7

लोकतंत्रा के परिणाम

लोकतंत्रा शासन सबसे बेहतर है क्योंकि :–

– नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है।

– व्यक्ति की गरिमा को बढ़ावा।

– बेहतर फैसले

– टकरावों का टालने का तरीका प्रदान करना।

– गलतियों को सुधारने की गुंजाईश होती है।

– इसका औपचारिक संविधन होता है जिसमें सरकार निर्माण और चुनाव की क्रिया का वर्णन होता है।

– लोकतंत्रा में नागरिकों को अधिकारों की गारंटी होती है।

– लोकतंत्रा सभी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान करता है।

2. उत्तरदायी, ज़िम्मेवार और वैध शासन

उत्तरदायी सरकार :– लोकतंत्रा एक उत्तरदायी सरकार है क्योंकि यह लोगों की सरकार है लोगों द्वारा बनाई गई है तथा लोगों के लिए है। लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिध्ि ा लोगों के प्रति उत्तरदायी है अगर लोग उनके कामों से खुश नहीं है तो लोग अपने नेता बदल सकते हैं। हर काम का उत्त्र देना प्रतिनिधियों के लिए जरूरी है।

जिम्मेवार सरकार :– लोकतंत्रा सरकार में लोगों को यह जानने का अधिकार है कि क्या निर्णय पूरे कायदे कानूनों के अनुसार लिए गए हैं। ऐसी पारदर्शिता गैर लोकतांत्रिक देशों में नहीं हैं।

वैध सरकार :– यह वैध शासन व्यवस्था है। यह सुस्त हो सकती है, कम कार्यकुशल हो सकती है, उसमें भ्रष्टाचार हो सकता है लेकिन यह लोगों की जरूरतों को अनदेखा नहीं कर सकती, इसी कारण पूरी दुनिया में लोकतंत्रा के विचार के प्रति जबरदस्त समर्थन का भाव है। लोग अपने द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों का शासन चाहते हैं।

प्रश्न :–

1. लोकतंत्रा की परिभाषा दो।

2. लोकतंत्रा किस प्रकार सरकार के अन्य रूपों से बेहतर है।

3. लोकतंत्रा किस तरह उत्तरदायी, जिम्मेवार और वैध सरकार का गठन करता है?

4. लोकतांत्रिक व्यवस्था राजनीतिक समानता पर आधारित होती है। इस कथन की पुष्टि करो।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 8
लोकतंत्रा की चुनौतियाँ

लोकतंत्रा के सामने चुनौतियां

चुनौती शब्द का अर्थ :– एक देश में लोकतांत्रिाक व्यवस्था की सुनिश्चित बनाने के लिए आने वाली विभिन्न मुश्किलें। हम आमतौर पर उन्हीं मुश्किलों को चुनौती कहते है जो महत्वपूर्ण तो हैं, लेकिन जिन पर जीत भी हासिल की जा सकती है।

चुनौतियाँ :– दुनिया के एक चौथाई हिस्से में अभी भी लोकतांत्रिाक शासन व्यवस्था नहीं है। इन इलाकों में लोकतंत्रा के लिए बहुत ही मुश्किल चुनौतियाँ है इन देशों में लोकतांत्रिाक सरकार गठित करने के लिए जरूरी बुनियादी आधार बनाने की चुनौती है।

– अधिकांश स्थापित लोकतांत्रिाक व्यवस्थाओं के सामने अपने विस्तार की चुनौती है। इसमें लोकतांत्रिाक शासन के बुनियादी सिद्धांतों की सभी इलाकों, सभी सामाजिक समूहों और विभिन्न संस्थाओं में लागू करना शामिल है।
– लोकतंत्रा को मजबूत करना – सभी लोकतांत्रिाक संस्थाओं और बरतावों को मजबूत करना। यह काम इस तरह से होना चाहिए कि लोग लोकतंत्रा से जुडी अपनी उमीदों को पूरा कर सकें।
– चुनावों में अधिक खर्चा होना। चुनाव में खड़ा होना सिर्फ अमीरों का काम ही है आम व्यक्ति चुनाव में खड़ा नहीं हो सकता। इसका खच्र्र कम करना चाहिए और यह खर्चा सरकार को उठाना चाहिए।

लोकतंत्रा में राजनीतिक सुधार :–

अर्थ :– लोकतंत्रा की विभिन्न चुनौतियों के बारे में सभी सुझाव या प्रस्ताव लोकतांत्रिाक सुधर या राजनीतिक सुधर कहे जाते हैं।

– कानून बनाकर राजनीति को सुधारना।
– सावधानी से बनाए गए कानून गलत राजनीतिक आचरणों को हतात्साहित और अच्छे कामकाज को प्रोत्साहित करेंगे।
– कानूनी बदलाव करते समय इस बात पर भी चिार करना होगा कि राजनीति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। कई बार प्रभाव एकदम उलटे निकलते हैं, जैसे कई राज्यों ने दो से ज्यादा बच्चों वाले लोगों के पंचायत चुनाव लडने पर रोक लगा दी है इसके कारण गरीब लोग और महिलाएँ लोकतांत्रिाक अवसर से वंचित हुई।
– सबसे बढ़िया कानून है जो लोगों के लोकतांत्रिाक सुधार करने की ताकत देते हैं।
– सूचना का अधिकार कानून लोगों को जानकार बनाने और लोकतंत्रा के रखवाले के तौर पर सक्रिय करने का अच्छा उदाहरण है।
– लोकतांत्रिाक सुधार राजनीतिक दल ही करते है। इसलिए राजनीतिक सुधारों का जोर मुख्यत लोकतांत्रिाक कामकाज को ज्यादा मजबूत बनाने पर होना चाहिए।
– राजनीतिक सुधार के किसी भी प्रस्ताव में यह सोच भी होनी चाहिए कि इन्हें कौन लागू करेगा और क्यों लागू करेगा।

प्रश्न :–

1. उन दो लोकतांत्रिाक देशों के नाम बताओ। जिन्हें विस्तार की चुनौती का सामना करना पड़ा है?
2. राजनीतिक सुधार क्या हैं?
3. सूचना के अधिकार का महत्व बताओ।
4. चुनौती शब्द का क्या अर्थ है।
5. लोकतंत्रा में राजनीतिक सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं?
6. लोकतंत्रा की व्यापक चुनौतियों की चर्चा करें।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

अर्थशास्त्रा विकास

पाठ – 1

विकास

विकास – विभिन्न व्यक्ति, विभिन्न लक्ष्य

- – लोगों के विकास के लक्ष्य भिन्न हो सकते है।
- – एक के लिए जो विकास है वह दूसरे के लिए विकास न हो। यहाँ तक कि वह दूसरे के लिए विनाशकारी भी हो सकता है।

आय और अन्य लक्ष्य :– ज्यादा आय, बराबरी का व्यवहार, स्वतंत्राता, काम की सुरक्षा, सम्मान व आदर, परिवार के लिए सुविधाएँ, वातावरण (स्वस्थ और सुरक्षित)

राष्ट्रीय विकास की धारणाएँ :

- – विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट 2006 के अनुसार, ''2004 में प्रतिव्यक्ति आय जिन देशो में 453000रूपये प्रति वर्ष या उससे अधिक समृद्ध या विकसित राष्ट्र कहलाते है। जिनकी आय 37000 रूपयें प्रति वर्ष या उससे कम है निम्न आय देश कहलाते हैं।
- – यू. एन. डी. पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, ''राष्ट्रीय विकास का अनुमान लोगों के शैक्षिक स्तर, उनकी स्वास्थय स्थिति तथा प्रति व्यक्ति आय के आधार पर होता है।''

धारणीय विकास :–

विकास हो पर इससे परिवेश को हानि न पहुँचे।

धारणीयता :– ऐसी निरंतर प्रक्रिया जो भविष्य की नस्ल की उत्पादकता को हानि पहुँचाए बिना ही वर्तमान नस्ल की आवश्यकताओं की संतुष्टि करती है।

औसत आय :– देश की कुल आय को कुल जनसंख्या से भाग देकर निकाली जाती है यह प्रति व्यक्ति आय भी कहलाती है।

शिशु मृत्यु दर :– किसी वर्ष में पैदा हुए 1000 जीवित बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मर जाने वाले बच्चों का अनुपात दिखाती है।

साक्षरता दर :– 7 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसंख्या का अनुपात।

निविल उपस्थिति अनुपात : 6–10 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले कुछ बच्चों का उस आयु वगग के कुल बच्चों के साथ प्रतिशत।

राष्ट्रीय आय :– देश के अंदर उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य तथा विदेशों से प्राप्त आय का जोड राष्ट्रीय आय कहलाती है।

प्रश्न

1. विश्व बैंक विभिन्न वर्गों का वर्गीकरण करने के लिये किस प्रमुख मापदण्ड का प्रयोग करता है? इस मापदण्ड की अगर कोई हैं तो सीमाएँ क्या है?
2. विकास मापने का यू.एन.डी.पी. का मापदण्ड किन पहलुओं में विश्व बैंक के मापदण्ड से अलग है?
3. धारणीयता का विषय विकास के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 2

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्राक

अर्थव्यवस्था के क्षेत्राक :–

प्राथमिक क्षेत्रा :– जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते है तो इसे प्राथमिक क्षेत्राक की गतिविधियाँ कहते है।

द्वितीयक क्षेत्राक :– प्राकृतिक उत्पादों को विनिमार्ण प्रणाली के जरिए अन्य रूपों में परिवर्तित करना। इसे औद्योगिक क्षेत्राक भी कहा जाता है।

तृतीयक क्षेत्राक :– यह क्षेत्राक वस्तु व सेवाओं का उत्पादन नहीं करता बल्कि प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्राक की उत्पादन प्रक्रिया में सहायकता करता है। इसे सेवा क्षेत्राक भी कहते है।

सकल घरेलू उत्पाद :– किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्राक द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का योग फल है।

उत्पादन में तृतीयक क्षेत्राक का बढ़ता महत्व :–

– किसी भी देश में अनेक सेवाओं जैसे अस्पताल परिवहन बैंक, डाक तार आदि की आवश्यकता होती है।

– कृषि एवं उद्योग के विकास में परिवहन व्यापर भण्डारण जैसी सेवाओं का विकास होता है।

– आय बढ़ने से कई सेवाओं जैसे रेस्तरा, पर्यटन, शापिंग निजी अस्पताल तथा विद्यालय आदि की मांग शुरू कर देते है।

– सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य हो गई है।

अल्प बेरोजगारी :– जब किसी काम में जितने लोगो की जरूरत हो उससे ज्यादा लोग काम में लगे हो और वह अपनी उत्पादन क्षमता से कम योग्यता से काम कर रहे है। प्रच्छन्न तथा छुपी बेरोजगारी भी कहते है।

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005

– 100 दिन के रोजगार की सरकार की ओर से गारंटी।

– सरकार रोजगार उपलब्ध कराने में असफल रहती है तो वह लोगों को बेरोजगारी भत्ता देगी।

संगठित क्षेत्राक

– रोजगार की अवधि नियमित होती है।

– सरकार द्वारा पंजीकृत होते है।

– सरकारी नियमों ढवं विनियमों का अनुपालन होता है।

– इसकी कुछ औपचारिक प्रक्रिया एवं कार्यविधि है।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

असंगठित क्षेत्राक :–

– छोटी और बिखरी इकाइयाँ, अधिकांशत : सरकारी नियंत्राण से बाहर रहती है।

– नियम–विनियम तो होते है परंतु उनका अनुपालन नहीं होता है।

– रोजगार सुरक्षित नहीं होता।

प्रश्न

1. क्या आप मानते है आर्थिक गतिविधियों का प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रा में विभाजन की उपयोगिता है? व्याख्या कीजिए।

2. तृतीयक क्षेत्राक अन्य क्षेत्राकों से भिन्न कैसे है? सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

3. प्रच्छन्न बेरोजगारी से क्या अभिप्राय है? शहरी और ग्रामीण क्षेत्राों से इसकी एक–2 उदाहरण दें।

4. ‘‘भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्राक कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है।’’ क्या आप इससे सहमत है? तर्क सहित उत्तर दें।

5. संगठित और असंगठित क्षेत्राकों की रोजगार परिस्थितियों की तुलना करें।

6. रा.ग्रा.रा.गा.अ 2005 के उद्देयों की व्याख्या कीजिए।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 3
मुद्रा और साख

वस्तु विनियम प्रणाली :– मुद्रा का उपयोग किये बिना वस्तुओं का लेन देन होता है।

आवश्यकताओं का दोहरा संयोग :– विनियम में दोनो पक्ष एक दूसरे से चीज खरीदने और बेचने पर सहमति रखते हो। वस्तु विनियम प्रणाली में आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना आवश्यक है।

विनियम का माध्यम :– मुद्रा विनियम प्रक्रिया में मध्यस्थता का काम करती है इसे विनियम का माध्यम कहा जाता है। किसी देश की सरकार इसे प्राधिकृत करती है।

– लोग बैंकों में अतिरिक्त नकद अपने नाम से खाता खोलकर जमा कर देते है।
– खातों में जमा धन की मांग जरिए निकाला जा सकता है जिसे मांग जमा कहाँ जाता है।
– चेक एक ऐसा कागज है जो बैंक को किसी के खाते से चेक पर लिखे नाम के किसी दूसरे व्यक्ति को एक खास रकम का भुगतान करने का आदेश देता है।

बैंकों की ऋण संबंधी गतिविधियाँ :–

– भारत में बैंक जमा का केवल 15 प्रतिशत हिस्सा अपने पास रखते है।
– इसे किसी एक दिन में जमाकर्ताओं द्वारा धन निकालने की संभावना को देखते हुए यह प्रावधान किया जाता है।
– बैंक जमा राशि के एक बड़े भाग को ऋण देने के लिए इस्तेमाल करते है।
– ब्याज के बीच का अंतर बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत है।

ऋण की शर्ते : – ब्याज की दर

– समर्थक ऋणाधार – आवश्यक कागजात – भुगतान के तरीके

विभिन्न ऋण व्यवस्थाओं में ऋण की शर्ते अलग–अलग है।

भारत में औपचारिक क्षेत्राक में साख :

बैंक और सहकारी समितियों से लिए कर्ज औपचारिक क्षेत्राक ऋण कहलाते है।

भारतीय रिजर्व बैंक के कार्य :

– केन्द्रीय सरकार की तरफ से करेंसी और नोट जारी करता है।
– देखता है कि बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए हुए है।
– समय–2 पर बैंकों से यह जानकारी लेता है कि कितना और किनको, किस ब्याज दर पर ऋण दे रहा है।

अनौपचारिक क्षेत्राक में साख : साहूकार, व्यापारी, मालिक, रिश्तेदार, दोस्त इत्यादि ऋण उपलब्ध कराते है।

– ऋणदाताओं की गतिविधियों की देखरेख करने वाली कोई संस्था नहीं है।
– ऋणदाता ऐच्छिक दरों पर ऋण देते है।
– नाजायज तरीकों से अपना ऋण वापिस लेते है।

प्रश्न :–

1. मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को किस तरह सुलझाती है?
2. चैक क्या है? चैक द्वारा भुगतान कैसे किया जाता है? उदाहरण देकर समझाएँ।
3. भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है? यह जरूरी क्यों है?
4. लोग अनौपचारिक क्षेत्रा से अधिक ऋण क्यों लेते है?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 4

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन या उत्पादन पर नियंत्राण स्थापित करने के तरीके :–

- – स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करना। संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कंपनी को अतिरिक्त निवेशक के धन तथा उत्पादन की नवीनतम प्रौद्योगिकी भी प्राप्त हो जाती है।
- – स्थानीय कंपनियों को खरीदना और उसके बाद उत्पादन का प्रसार करना।
- – छोटे उत्पादकों को उत्पादन का ऑर्डर देना।

स्थानीय कंपनियों के साथ सांझेदारी द्वारा आपूर्ति के लिए स्थानीय कंपनियों का इस्तेमाल करके और स्थानीय कंपनियों से निकट प्रतिस्पर्धा करके अथवा उन्हें खरीद कर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दूरस्थ स्थानों के उत्पादन पर अपना प्रभाव जमा रही है जिससे दूर दूर स्थानों पर फैला उत्पादन परस्पर संबंधित हो रहा है।

विदेश व्यापार और बाज़ारों का एकीकरणः

- – एक देश का दूसरे देशों के साथ वस्तुओं व सेवाओं का आयात व निर्यात।
- – वस्तुओं का एक बाज़ार से दूसरे बाज़ार में आवागमन होता है।
- – बाज़ार में वस्तुओं के विकल्प बढ़ जाते हैं।
- – दो बाजारों में एक ही वस्तु का मूल्य एक समान होने लगता है।
- – दो देशों के उत्पादक एक दूसरे से दूर होकर भी एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर सकते है। इस प्रकार व्यापार विभिन्न देशों के बाज़ारों को जोडने या एकीकरण में सहायक होता है।

व्यापार अवरोधक तथा इनका महत्व :

- – वे नियम तथा कानून जो देशों के आयात–निर्यात पर अंकुश लगाते है।
- – सरकार व्यापर अवरोधक का प्रयोग विदेशी व्यापार में वृद्धि या कटौती करने तथादेश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्राा में आयातित होनी चाहिए, यह निर्णय करने के लिए कर सकती है।

विशेष आर्थिक क्षेत्राः

- – केन्द्र एवं राज्य सरकारें द्वारा भारत में विदेशी निवेश हेतु विदेशी कंपनियों को आकर्षित करने के लिए ऐसे औद्योगिक क्षेत्राों की स्थापना जहाँ विश्व स्तरीय सुविधााएँ – बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, भण्डारण, मनोरंजन और शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध हो।

भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव :–

- – स्थानीय एवं विदेशी उत्पादकों के बीच वृहतर प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ताओं को लाभ

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

हुआ है।

– उपभोक्ताओं के समक्ष पहले से अधिक विकल्प है और वे अब अनेक उत्पादों की उत्कृष्ट गुणवत्ता और कम कीमत से लाभान्वित हो रहे है।
– विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है।
– उद्योगों और सेवाओं में नये रोज़गार उत्पन्न हुए है।
– शीर्ष भारतीय कंपनियाँ बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा से लाभानिवत हुई है और इन कंपनियों ने नवीनतम् प्रौद्योगिकी और उत्पदान प्रणाली में निवेश कर अपने उत्पादन–मानकों को ऊँचा उठाया है।
– बडी भारतीय कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभरने के योग्य बनाया है।
– सेवा प्रदाता कपनियों विशेषकर सूचना और संचार प्राद्योगिकी वाली कंपनियों के लिए नये अवसरों का सृजन किया है।

प्रश्नः

1. दूसरे देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस प्रकार उत्पादन या उत्पादन पर नियंत्राण स्थापित करती है?
2. विदेश व्यापर क्या है? विभिन्न देशों के बाजारों के एकीकरण में यह किस प्रकार मदद करता है।
3. व्यापार अवरोधक क्या है? सरकार व्यापार अवरोधकोंा का प्रयोग क्यों करती है?
4. विशेष आर्थिक क्षेत्रा क्या है? सरकार इनकी स्थापना क्यों करती है?
5. भारत पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पडा है?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाठ – 5
उपभोक्ता अधिकार

उपभोक्ताओं के अधिकार :

उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा के लिए कानून द्वारा दिए गए अधिकार जैसे :–

- सुरक्षा का अधिकार
- सूचना का अधिकार
- चुनने का अधिकार
- क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार
- उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार

उपभोक्ताओं के शोषण के कारण :

- सीमित सूचना
- सीमित आपूर्ति
- सीमित प्रतिस्पर्धा
- साक्षरता कम होना

उपभोक्ताओं के कर्त्तव्य :

- कोई भी माल खरीदते समय उपभोक्ताओं को सामान की गुणवत्ता अवश्यक देखनी चाहिए। जहां भी संभव हो गारंटी कार्ड अवश्य लेना चाहिए।
- खरीदे गए सामान व सेवा की रसीद अवश्यक लेनी चाहिए।
- अपनी वास्तविक समस्या की शिकायत अवश्यक करनी चाहिए।
- आई.एस.आई. तथा एगमार्क निशानों वाला सामान ही खरीदे।
- अपने अधिकारों की जानकारी अवश्यक होनी चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर उन अधिकारों का प्रयोग भी करना चाहिए।

उपभोक्ता निवारण प्रक्रिया की सीमाएँ :

- उपभोक्ता निवारण प्रक्रिया जटिल, खर्चीली और समय साध्य साबित हो रही है।
- कई बार उपभोक्ताओं को वकीलों का सहारा लेना पडता है। यह मुकदमें अदालती कार्यवाहियों में शामिल होने और आगे बढ़ने आदि में काफी समय लेते है।
- अधिकांश खरीददारियों के समय रसीद नहीं दी जाती हैं? ऐसी स्थिति में प्रमाण जुटाना आसान नहीं होता है।
- बाज़ार में अधिकांश खरीददारियाँ छोटे फुटकर दुकानों से होती है।
- श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए कानूनों के लागू होने के बावजूद खास तौर से असंगठित क्षेत्रा में ये कमजोर है। इस प्रकार बाज़ारों के कार्य करने के लिए नियमों

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

और विनियमों का प्रायः पालन नहीं होता।

उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986 (कोपरा)

- उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया कानून।
- कोपरा के अंतर्गत उपभोक्ता विवादों के निपटारे के लिए जिला राज्य और राष्ट्रीय स्तरों पर एक त्रिास्तरीय न्यायिक तंत्रा स्थापित किया गया है।
- जिला स्तर पर 20 लाख राज्य स्तर पर 20 लाख से एक करोड तक तथा राष्ट्रीय स्तर की अदालतें 1 करोड से उपर की दावेदारी से संबंधित मुकदमों को देखती है।

प्रश्न :–

1. उपभोक्ताओं के अधिकार बताएँ और प्रत्येक अधिकार पर दो पंक्तियाँ लिखें।
2. उपभोक्ताओं के शोषण के कारणों का वर्णन करें।
3. अपने क्षेत्रा के बाज़ार में जाने पर उपभोक्ता के रूप में अपने कुछ कर्त्तव्यों का वर्णन करें।
4. उपभोक्ता निवारण प्रक्रिया की सीमाएँ क्या है?
5. उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम – 1986 का वर्णन कीजिए।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

History

Lesson No. 1

Nationalism and Imperialism

Idealistic liberal democratic sentiments because of a narrow creed with limited ends. Nationalist groups became increasingly intolerant of each other and ever ready to go to war.

- After 1871 nationalist tension mounted in Europe in the area called Balkan's. The Balkans was a region of geographical and ethnic variations.
- A large part of Balkans was under the contral of the ottoman Empire.
- The spread of the ideas of romantic nationalism in the Balkans and downfall of Ottoman Empire made this region very explosive.
- As the different Slavic nationalist struggled to define their identity and independence, the Balkans became an area of conflict.
- There was intense rivalry among the European powers over trade and colonies.
- This led to a series of wars in the region and finally the first world war.
- Many countries in the world which had been colonized by the European powers in the 19th century began to oppose imperial domination.
- The anti-imperial movements developed nationalism and formed independent nation-states.

A New Conservatism after 1815

- After the defeat of Napoleon in 1815 European govts were driven by the spirit of conservatism.
- Conservatives believed in traditional institutions of state & society like the monarchy, the church, social hierarchies, property and the family be preserved.
- In 1815 representatives of the European powers. Britain, Russia, Prussia and Austria who had collectively defeated Napoleon met at Vienna to draw up a settlement for Europe.
- The treaty of Vienna of 1815. The Bourbon dynasty which had been deposed after the French revolution was restored to power.
- Conservative regimes set up in 1815 were autocratic. They did not tolerate criticism and sought to curb the activities.
- Most of them imposed censorship laws to control newspapers, books plays and songs and reflected ideas of liberty and freedom.

Questions :

1. Why did Nationalist conflict rise in the Balkans?
2. Describe the rise of Nationalism in the third phase of 19th century in Europe.
3. What do you understand by the term conservatism?
4. When was Napoleon defeated and who defeated him?
5. Explain the treaty of Vienna what were its objectives?
6. What type of conservative order existed in Europe in 1815?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson 3
Nationalism in India

Differing strands within the movement.

1. Rebellion in the countryside : - From the cities, the non co-operation movement spread to the countryside. After the war, the struggles of peasants and tribal were developing in different parts of India.
2. One movement here war against talukdars and landlords who demanded from peasants exorbitantly high nets and a variety of other cases. Peasants had to its begar. The peasants movement demanded reduction of revenue, abolition of begar and social boycott of oppressive landlords.
3. Oudh Kisan Sabha was setup headed by. Jawaharlal Nehru, within a month, over 300 branches had been set up in the villagers.
4. Tribal peasants interpreted the message of Mahatma Gandhi and the idea of Swaraj in yet another way.
5. The colonial govt had closed large forest areas preventing people from entering the forests to graze their cattle, or to collect fuel wood and fruits. Alluri Sitaram Raju claimed that he had a variety of special powers. He asserted that India could be liberated only by the use of force.

How participants saw the movement :

1. Different social groups that participated in the civil disobedience movement.
2. Why did they join the movement?
3. What were their ideals? What did Swaraj mean to them?

1. In the countryside rich peasant communities, being producers of commercial crops, they were very hard hit by the trade depression and falling prices.
2. The poorer peasantry were not just interested in the lowering of the revenue demand.
3. Business classes? They wanted protection against imports of foreign goods, and a rupee sterling foreign exchange ratio that would discourage imports.
4. The industrial working classes did not participate in civil disobedience movement in large numbers.
5. Another important feature of the civil disobedience movement was the large sale participation of women. In urban areas, these women were from high caste families in rural areas from rich peasants house holds.

Answer the following Questions :

1. What do you mean by Begar. Who raise the voice against this and what were his ideas?
2. Write a short note on Alluri Sita Ram Raju and his work or his activities, During non co-operation movement.
3. All the different social groups which joined the non co-operation movement why they joined the movement.
4. What was the role of women in non co-operation movement. Described them.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 4
The Making of a Global World

Summary

1.3 Conquest, Disease and Trade :

- In 16th century after European sailors found a sea route to Asia, they discovered America.
- The Indian subcontinent had been known for bustling trade with goods, people, customs and knowledge . It was a crucial point in their trade network.
- After the discovery of America, its vast lands and abundant crops and minerals began to transform trade and lives every where.
- Precious metals, particularly silver from mines located in Peru and Maxico enhanced Europe's wealth and financed its trade with Asia.
- The Portuguese and Spanish conquest and colonization of America was under way. The most powerful weapon of the Spanish conquerors was not a conventional military weapon but germs of small pax which they carried. America's original inhabitants had no immunity against such type of diseases.

2.1 A World Economy Takes Shape :

- Abolition of the Corn law.
- Under pressure from lauded groups the government restricted the import of food grains.
- After the carn laws were scrapped, food could be imported into Britain more cheaply than it could be produced in the country.
- British farmers were unable to compete with imports. Vast areas of land were left uncultivated.
- As food prices fell, consumption in Britain rose.
- Faster industrial growth in Britain led to higher incomes and more food imports.

4.1 Bretton Woods Institutions :

- To deal with external surpluses and deficits a conference was held in July 1944 at Bretton woods in New Hampshire U.S.A.
- International Mountary fund and world Bank were set up to finance post war reconstruction.
- The past war international economic system is known as Bretton woods systems.
- This system was based on fixed exchange rates.
- IMF and World Bank are referred as Bretton Woods Twins.
- U.S has an effective right of veto over key IMF and World Bank.

4.3 New International Economic Order - NIEO

- Most developing countries did not benefit from the fast growth of Western economies

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

in 1950's & 60's.

- They organized themselves as a group. The group of 77 or G-77 to demand a new international economic order (NIEO).
- It was a system that would give them real control over their natural resources more development assistance, fairer prices for raw materials and better access for their manufactured goods in developed countries markets.

Questions :

1. Explain how the Global transfer of disease in the pre-modern world helped in the colonialism of the Americas?
2. Why did the British Government had to take the decision to abolish the corn laws?
3. What do you mean by bretton Woods Agreement? What was its aim?
4. What is referred to as the G-77 countries? In what way can G-77 be seen as a reaction to the activities of bretton Woods Twins?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 5
The Age of Industrialization

Summary :

- Protective Tariff - To stop the import of certain goods and to protect the domestic goods a tariff was imposed. This tariff was imposed in order to save the domestic goods from the competition of imported goods and also to save the interest of local producers.
- Laissez, Faire - According to the economists, for the fast trade a policy of Laissez Faire should be applied whereby government should neither interfere in trade nor in the industrial production. This policy was introduced by a British economist named Adam Smith.
- Policy of Protection - The policy to be applied in order to protect the newly formed industry from stiff competition.
- Imperial preference - During British period, the goods imported from Britain to India be given special rights and facilities.
- Chamber of commerce - Chamber of commerce was established in the 19th century in order to take collective decisions on certain important issues concerning trade and commerce. Its first office was set up in Madras.
- Nationalist Message - Indian manufacturers advertised the nationalist message very clearly. They said, if you care for the national then buy products that Indians produce. Advertisement became a vehicle of nationalist message of Swadeshi.

Questions :

1. Why did Britain imposed protective tariff?
2. Which policy was suggested by the economists to save industry and trade from government interfere.
3. Explain what is meant by proto-industrialization?
4. What was the aim behind establishing Chamber of Commerce? Where was it established in India first of all?
5. What is the importance of Advertisement in creating new consumers? How did Indian manufacturers send Nationalist message through these advertisements?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 7

Print Culture and the Modern World.

The Print Revolution and its Impact.

1. Printing press, a new reading public emerged. Reduced the cost of books, now a reading public came into being.
2. Knowledge was transferred orally. Before the age of print books were not only expensive but they could not be produced in sufficient numbers.
3. But the transition was not so simple. Books could be read only by the literate and the rates of literary in most European crematories were very low, Oral culture thus entered print and printed material was orally transmitted. And the hearing public and reading public became intermingled.

Religious Debates and the fear of Print.

1. Print created the possibility of wide circulation of ideas.
2. Through the printed message, they could persuade people to think differently and introduced a new world of debate and discussion. This had significance in different sphere of life.
3. Many were apprehensive of the effects that the easier access to the printed world and the wider circulation of books, could have on people's minds.
4. If that happened the authority of 'valuable' literature would be destroyed, expressed by religious authorities and monarchs, as well as many writers and artists, achievement of religion areas of Martin Luther.
5. A new intellectual atmosphere and helped spread the new ideas that led to the reformation.

Print culture and the French Revolution :

1. Print popularized the ideas of the enlightenment thinkers. Collectively, their writings provided a critical connmentary or tradition, superstition and despotism.
2. Print created a new culture of dialogue and debate. All values, forms and institutions were re-evaluated and discussed by a public that had become aware of the power of reason.
3. 1780's there was an outpouring of literature that mocked the royalty and criticised their morality. In the process, it raised questions about the existing social order.
4. The print helps the spread of ideas. People did not read just one kind of literature. If they read the ideas of Voltaire and Rousseau, They were also exposed to monarchic and church propaganda.
5. Print did not directly shape their minds, but it did open up the possibility of thinking differently.

The Nineteenth Century (Women)

1. As primary education became compulsory from the late nineteenth century. A large numbers of new readers were especially women.
2. Women became important as readers as well as writers. Penny magazines were especially meant for women, as were manuals treaching proper behaviour and house keeping.
3. In the nineteenth century, lending libraries in England, lower middle class people. Sometimes self educated working class people wrote for themselves. Women were seen as important readers. Some of the best known novelists were women : Jane Austin, the Bronte sisters, George Eliot. their writings became important in defining a new type of woman.

Discuss :

1. What was print revolution?
2. In eighteenth century Europe think that print culture would bring enlightenment and end despotism discuss?
3. Why did some people fear the effect of easily available printed books? Choose one example from Europe?
4. Give reason. Martin Luther was in favour of print and spoke out in praise of it?
5. Give reasons, the Roman Catholic Church began keeping an index of prohibited books from the mid-sixteenth century.
6. In nineteenth century in Europe. There was a great increase in women literature? Explain it.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Geography
Lesson No. 1
Resources and Development

Summary :

1. **Resource Planning in India :** It involves :
   1. Identification and inventory of resources across the regions of the country.
   2. Evolving a planning structure endowed with appropriate technology, skill and institutional set up far implementing resource development plans.
   3. Matching the resources development plans with over all national development plans.
2. **Land use Pattern in India :**
   - Total geographical area of India is 3.28 million sq. km.
   - Land use data however is available only for 93% of the total area because the land use reporting far most of the North-East States except Assam has not been done fully.
   - Some area of Jammu and Kashmir occupied by Pakistan and China have also not been surveyed.
   - The land under permanent pasture has also decreased.
   - Fallow land - left without cultivation far one or less than one agricultural year.
   - Net sown area total -total area sown in an agricultural year.
   - More net sown area in Punjab and Haryana.
   - Less net sown area in Arunachal Pradesh, Mizoram, Manipur and Andaman Nicobar Islands.
   - National Forest Policy in India in 1952.
   - Waste land includes rocky, Arid and desert area and land put to other non agricultural uses includes settlements, roads, railways, industry etc.
   - Continuous use of land over a long period of time without taking appropriate measures to conserve and manage it.

Answer the following questions :

1. What are the three stages of resource planning? Describe it.
2. Why land use data is not available for whole country?
3. Why land is decreasing under permanent pastures?
4. What is net sown area? Which areas of India has more net sown area?
5. Describe waste land.
6. Describe two major causes of land degradation in India?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 2
Water Resources

Summary :

Hydraulic Structure in Ancient India :

- In the first century B.C. Sringaverapura near Allahabad had sophisticated water harvesting system channeling the flood water of the river Ganga.
- During the time of Chandragupta Mauriya, dams lakes and irrigation systems were extensively built.
- Evidences of sophisticated irrigation works have also been found in Kalinga, Nagarjuna Konda, Bennur, Kohlapur etc.
- In 11th century, Bhopal lake, one of the larest artificial lakes of its time was built.
- In 14th century, the tank of Hauz Khas, Delhi, was constructed by Iltutmish for supplying water of Siri Fort area.

Dam :

A dam is a barrier across flowing water that obstructs, directs or retards the flow, often creating a reservoir, lake or impoundment.

- Classification of dams according to structure, intended purpose or height.
- Based on structure or material used, dams are classified as timber dams, embankment dams or masonry dams, with several sub-types.
- According to the height dams can be categories as large dams and major dams or alternatively as low dams, medium height dams and high dams.

3. Rain Water Harvesting :

- In hill and mountainous regions, people built diversion channels like the 'guls' or 'kuls' of the western Himalayas for agriculture.
- Rooftop rain water harvesting was commonly practiced to store drinking water, in Rajasthan.
- In the flood plains of Bengal, people developed inundation channels to irrigate their fields.
- In arid and semi arid regions, agricultural fields were converted into rain fed storage structures that allowed the water to stand and moisten the soil like the 'khadins' in Jaisalmer and 'Johads' in other parts of Rajasthan.
- Tankas - underground tanks ro tankas for storing drinking water.
- In Bikaner, phalodi and Barmer.
- The tanks could be as large as a big room.
- Roof top rainwater harvesting as drinking water.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

- The first spell of rain was usually not collected as this would clean the roofs and the pipes.
- Rain water called as Palar Pani.
- Many houses constructed underground rooms adjoining the ‘tankas’ to beat the summer heat as it would keep the room cool.
- Some houses still maintain the tanks since they do not like the taste of tap water.
- In Gendathur, a remote backward village in Mysore, Karnataka, villagers have installed, in their house hold’s roof top, rainwater harvesting system to meet their water needs.

Answer the following questions :

1. Describe the Hydraulic structures made in ancient India?
2. What is dam? On which bases down are categorized?
3. What are the methods of rain water harvesting?
4. In which parts of India ‘Guls’ or ‘Kuls’ are found?
5. What are the methods of rain water harvesting in Rajasthan?
6. What is Tank? Where and why these are constructed?
7. Why first spell of rain was not collected?
8. Why underground rooms were constructed along with Tankas?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 3
Agriculture

Summary :

Technological and Institutional reforms :

- Consolidation of holdings, co-operation and abolition of zamidari, etc. were given priority to bring about institutional reforms in the country after independence.
- Land reform was the main focus of our first five year plan.
- The green revolution based on the use of package technology and the white revolution (operation flood) were some of the strategies initiated to improves the lot of Indian agriculture.
- Development in few selected areas. In the 1980s and 1990s, a comprehensive land development progreamme was initiated, which includes both institutional and technological reforms.
- Provision for crop insurance against drought, flood, cyclone, fire and disease.
- Establishment of Grameen Banks, cooperative societies and banks for providing loan facilities to the farmers at lower rates of interest.
- Kissan credit cards and personal accident insurance schemes introduced.
- Special weather bulletins and agricultural programmes for farmers were introduced on radio and T.V.
- The government also announces minimum support price.
- Remunerative and procurement prices for important crops to check the exploitation of farmers by speculators and middleman.

3. Contribution of Agricultures to the National Economy, Employment and Output : -

- Agriculture backbone of Indian Economy.
- Share in the gross domestic product.
- Providing employment.
- Livelihood to the population.
- The government of India made concerted efforts to modernize agriculture.
- Establishment of Indian council of Agricultural Research, agricultural universities.
- Veterinary services and animal breading centres.
- Horticulture development.
- Research and development in the field of meteorology and weather forecast.

Answer the following Questions :

1. Describe the technological and institutional reforms done in agriculture.
2. What is package technology?
3. Why government provides crop insurance to the farmers?
4. What is the role of agriculture in Indian economy?
5. How Indian agriculture may be modernised?
6. What is the objective behind weather forecasting far farmers on TV. and Radio?
7. What is land consolidation? Why it was implemented?
8. Why government announces minimum support price for farmers?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 4
Minerals & Energy Resources

Summary :

I. Mode of occurrence of Mineral :

Where are these minerals found.

Minerals are usually found in "Ores". The term ore is described as accumulation of any mineral mixed with other elements, it should have sufficient concentration to make its extraction viable. The type of formation or structure in which they are found determines their relative ease of mining and cost of extraction.

Minerals Generally Occur in These forms :

(i) In igneous and metamorphic rocks minerals may occur in the cracks, crevices, faults or joints. The smaller occurrences are called vein and the larger are called lodes. They are formed when minerals in liquid / molten & gaseous forms are forced upwards through cavities towards earth's surface. They cool and solidify as they rise. They include tin, copper, Zinc, lead etc.

(ii) **Sedimentary Rocks :** No. of minerals occur in beds and layers. They have been formed as a result of deposition, accumulation and concentration. of horizontal strata eg Gypsum, potash salt & sodium salt. They are formed as a result of evaporation in arid region.

(iii) **Decomposition of Surface Rocks :** Involves the removal of soluble constituents, leaving a residual mass of weathered material containing ores eg. Bauxite.

(iv) **Alluvial Deposits :** Occur in sands of valley floors and the base of hills. These are called 'Placer deposits ' and are not corroded by water eg gold, silver, tin platinum.

(v) Ocean waters contain vast quantities of minerals but most of these are too widely diffused to be of economic significance, however common salt, magnesium & bromine are largely derived.

II. Major Iron Ore Belts in India :

1. **Orissa Jharkand Belt :** In Orissa high grade hematite ore is found in Badampahar mines in the Mayurbhanj and Kendujhar. In Jharkand haematite iron ore is mined in Gua and Noamundi.
2. **Durg - Bastar - Chandrapur belt :** Lies in chattisgarh and Maharashtra high grade hematitis are found in Bailadila range of hills in Chatisgarh.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

3. **Bellavy Chitradurga - Chikmaglur - Tumkur Belt :** In Karnataka has large reserves of iron ore. Kudermuch mines located in western Ghats of Karnataka and known to be one of the largest.
4. **Maharashtra- Goa Belt :** Includes state of Goa and Ratnagir district of Maharashtra. Although ores are not of very high quality yet they are efficiently exploited.

III. Conservation of Energy Resources :

Energy is a basic requirement for economic development. Every sector of national economy agriculture, industry, transport, commercial and domestic needs inputs of energy. There is an urgent need to develop a sustainable path of energy development. India is presently one of the least energy efficient countries in the world. We have to adopt a caution approach for judicious use.

- Using public transport instead of individual.
- Switching of electricity when not in use.
- Using power saving devices.
- Using non conventional sources of power.

Answer the following questions :

1. Which minerals are formed by decomposition of rocks, leaving a residual mass of weathered material.
2. Minerals are deposited and accumulated in the stratas of which rocks?
3. Which mineral is contained in Monasite sand?
4. How are minerals formed in igneous & metamorphic rocks.?
5. Why do we need to conserve energy resources?
6. Explain the distribution of coal in India?
7. Explain the distribution of iron in India?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 5

Manufacturing Industries

I. Importance of Manufacturing :

Manufacturing sector is considered the backbone of development in general and economic development.

(i) Manufacturing industries helps in modernising agriculture.

(ii) It reduce the heavy dependence of people on agriculture income by providing them jobs.

(iii) Helps in eradication of unemployment & poverty.

(iv) Helps in bringing down regional disparities.

(v) Exports of manufactured goods expand trade & commerce.

II. Iron and Steel Industry :

- Iron and steel industry is the basic industry steel is needed to manufacture a variety of engineering goods, construction material, defence, medical, telephonic, scientific equipment and variety of consumer goods.
- Iron and steel industry is a heavy industry because all raw material as well as finished goods are heavy and bulky entailing heavy transportation costs. Iron ore, coking coal and lime stone are required in 4 : 2 : 1
- India is an important iron and steel producing country in the world yet we lag behind because.

(a) High costs and limited availability of coking coal.

(b) Lower productivity of labour.

(c) Irregular supply of energy.

(d) Poor infrastructure.

III. Industrial Pollution and Environmental Degradation :

Industries contribute significantly to India's economic growth and development but increase in pollution results in degradation of environment.

4 Types of Pollution :

(a) **Air** : caused by undesirable gases such as sulpher dioxide and carbon monoxide, air borne particles such as dust, sprays, mist & smoke.

(b) **Water Pollution** : Caused by organic & inorganic industrial wastes such as release of lead, mercury pesticides, fertilizers, synthetic chemical, plastics, rubber, fly ash, phosphogypsum etc.

(c) **Thermal Pollution :** Caused by nuclear power plants nuclear & weapon

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

production cause cancers birth defects & miscarriages.

(d) **Noise Pollution :** Cause heaving impairment, increased heart rate & blood pressure by making unwanted noise.

(IV) Control of Environment Degradation :

- Minimising the use of water by reusing recycling.
- Harvesting rainwater to meet water requirement.
- Treatment of hot water and effluents before releasing in ponds & rivers, involves 3 steps.

1. Primary treatment by mechanical means.
2. Secondary treatment by biological process.
3. Tertiary treatment by biological chemical & physical processes.

Answer the following Questions :

1. Describe the importance of Industries in the Economic development of a country?
2. Why iron and steel industry is called the basic industry?
3. Name the important raw material used in the manufacturing of iron and steel.
4. Critically examine how industries causes the environmental degradation?
5. Suggest some measures to control environmental degradation?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 6

Lifelines of National Economy

I. Roadways :

India has one of the largest road networks in the world. Its importance can be viewed.

(i) Construction cost of roads is much lower.

(ii) Roads can traverse comparatively more dissected and undulating topography.

(iii) Roads can negotiate higher gradients of slope & as such can traverse mountains.

(iv) It is economical.

(v) It provides door to door services.

(vi) It is used as feeder to other modes of transport.

II. Golden Quadrilateral Super Highways :

- The Govt. has launched a major road development project linking Delhi-Kolkata-Chennai-Mumbai & Delhi by six-lane super highways.
- The North-South corridors linking Srinagar [Jammu & Kashmir] & Kanyakumari [T.N.] & East-West Corridor Connecting silcher (Assam) & Porbander (Gujarat). The major objective of these super highways is to reduce time & distance.

III. Railways :

- The distribution pattern of the railway network in the country has been largely influence by physiographic, economic and administrative factors.
- The Himalyan mountains regions are unfavourable for the construction of railway lines due to high relief sparse population & each of economic opportunities.
- The northern plains provide most favourable condition having high population density.
- Rivers also create problem for lay down of railway tracts.

IV. Pipelines :

Pipelines transport network is a new arrival on the transportation map of India. Its initial cost is high but subsequent running costs are minimal. It is used for transporting crude oil, petroleum product & natural gas.

3 Important Networks :

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

1. Oil field in Assam to Kanpur (U.P.), via Guwahati, Barauni & Allahabad.

2. From Salaya in Gujarat to Jalandhar. In Punjab via Viramgam, Mathura, Delhi & Panipat.

3. Gas pipelines from Hazira in Gujarat connects Jagdishpur in UP via Vijaypur in Madhya Pradesh.

V. International Trade :

- The exchange of goods among people; states & countries is referred to as trade. Trade between two countries is called International Trade.
- Exports and imports are the components of trade. The balance of a trade of a country is the difference b/w its export and import.
- When the value of exports exceeds the value of imports, it is called favourable balance of trades.

VI. Tourism as a Trade :

- Tourism has proved itself as one of the most important. aspect of trade. Tourism in India has grown substantially. It helps as
- Promotion of National Integration.
- Provide support to local handicrafts
- Provides support to cultural pursuits.
- Development of international understanding about our culture and heritage.

Answer the following questions :

1. Critically examine how roadways are more imp. than railways.
2. What is the importance of super-highways in our national economy.
3. Describe the factors affecting the distribution of Railway network.
4. What are merits and demerits of pipelines?
5. Explain the three important network of pipelines in India.
6. What do you mean by balance trade? taking into account India's trade?
7. Suggest some measures to promote tourism in India?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

CIVICS
Lesson No. 1
Power Sharing

Summary

Power Sharing :

- Power sharing is important because it the conflict between different social groups.
- Social conflicts often lead to violence and political instability, power sharing is a good way to ensure the stability of political order.
- A democratic rule involves sharing power with those affected by its exercise, and who have to live with its effects. People have a right to be consuloted on how they are to be governed. A legitimate gout is one .... citizens through participation, acquire a stake in the system.
- One basis of principle of democracy is that people are the source of all political power.
- Power is shared among different organs of govt such as the legislature, executive and judiciary.
- Power can be should among governments at different levels a general govt. for the entire country and governments at the provincial or regional level.

Questions :

1. What do you mean by power sharing?
2. Name all the different organs of govt.?
3. What do you mean power sharing in a country?
4. What do you mean by majority?
5. What are different forms of power sharing in modern democracies give an example of each of these.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 2
Federalism

Features of Federalism

- There are two or more levels of Govt.
- Different tiers of Govt. govern the same citizens, but each tier has its own jurisdiction in specific matters of legislation, taxation and administration.
- The jurisdictions of the respective levels or tiers of Govt are specified in the constitution.
- Require the consent of both the levels of Govt.
- Courts have the power to interpret the constitution and the powers of different levels of Govt.
- An ideal federal system has both aspects : mutual trust and agreement to live together.
- The first route involves independent states coming together on their own to form a bigger unit.
- The second route is where a large country decides to divide its power between the constituent states and the national Govt.

Federalism in India

- The constitution originally provided for a two tier system of Govt the union Govt or what we call the Central Govt, representing the union of India and the state Govt. later, a third tier of federalism was added in the form of Panchayats and Municipalities.
- Constitution clearly provided a three fold distribution of legislative powers between the union Govt and the state Govt :

1. Union list :- Defence of the country foreign affairs, banking.
2. State List : Police, trade, commerce, agriculture.
3. Concurrent List : Education, Forest, Trade Union, Marriage.
4. Residuary Subject : Computer software

- Only Jammu & Kashmir has their own constitution.

Decentralization in India

- When power is taken away from central and State Govt. and given to local Govt. it is called decentralisation.
- The basic idea behind decentralisation is that there are a large number of problems and issues which are best settled at the local level.
- Local govt. get constitutional importance in democracy.
- And representation of women may also increased with this role played by

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

women in democracy became more stronger.

Questions :

1. What do you mean by Federalism?
2. What do you mean by jurisdiction?
3. How many lists we have retated to legislative powers?
4. What do you mean by decentralisation?
5. What is the main difference between a federal form of Govt and a unitary one? Explain with an example?
6. How power shared between Central and State Govt. in Federalism.
7. Write main features of Federal Government?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 3
Democracy and Diversity

Summary

Differences, Similarities and Divisions

Origins of Social Differences

(a) On the basis of birth

(b) on the basis of colour

Politics of Social Divisions

Democracy involves competition among various political parties. Their competitions tends to divide any society if they start competing in terms of some existing social divisions, it can make social divisions into political divisions and lead to conflict, violence or even disintegration of a country.

- It would be best if there are no social divisions in any country. If social divisions do exist in a country, they must never be expressed in politics.
- Social divisions affect voting in most countries.
- In a democracy, political expression of social divisions is very normal and can be healthy.
- Expression of various kinds of social divisions in politics after results in their canceling one an other out and thus reducing their intensity.

Questions :

1. When does a social difference become a social division?
2. How do social divisions affect politics? Give two examples?
3. How does social division & politics interrelate each other explain it?
4. How does social divisions make democracy stronger?
5. Discuss three factors are crucial in deciding the outcome of politics of social divisions?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 4
Gender Religion and Caste

Summary

Public / Private Division

- In fact the majority of women do some sort of paid work in addition to domestic labour. But their work is not valued and does not get recognition.
- Although women constitute half of the humanity, their role in public life especially politics, is minimal in most societies.
- Women in different parts of the world organised and agitated for equal rights. There were agitation demanded enhancing the political and legal status of women and improving their educational and other opportunities. More radical women movements aimed at equality in personal and family life as well. These movements are called feminist movements.

Patriarchal Society : Mostly societies are male dominating even day to day participation of women may increase than also our society is a patriarchal society on the basis of :

- Literacy rate
- No wonder the proportion of women among the highly paid and valued jobs is still very small.
- Her work is not paid and therefore often not valued.
- Women are paid less than men.
- Girl child aborted before she is born.
- various kinds of harassment, exploitation and violence against women.

Religion, Communalism and Politics

- Unlike gender differences, the religious differences are often expressed in the field of politics.
- Communalism happens when beliefs of one religion are presented as superior to thoseof other religions, when the demands of one religious group are formed in opposition to another and when state power is used to establish domination of one religious group over the rest. This manner of using religious in politics is communal politics.

  Communalism can take various forms in politics :
- Stereo types of religious communities and belief in the superiority of one's religion over other religions.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

- a desire to form a separate political unit.
- Often involves special appeal to the interests in preference to others.
- Ugly form of communal violence, riots and massacre.

Secular State

- No official religion - constitution does not give a special status to any religion.
- freedom to profess, practice and propagate any religion.
- The constitution prohibits discrimination on ground of religion.
- allows the state to intervene is the matter of religion.
- ensure equality within religious communities.

Caste and Politics :

- They keep in mind the caste composition of the electorate and nominate candidates from different castes.
- Political parties and candidates in elections make appeals to caste sentiments to muster support.
- No parliamentary constituency in the country has a clear majority of one single caste.
- No party wins the votes of all the voters of a caste or community.

Questions :

1. What do you mean by division of sex?
2. What do you mean by Feminism?
3. What do you mean by communal politics?
4. Mention any two constitutional provisions that make. India a secular state?
5. What sexual division of labour?
6. State different forms of communal politics with one example each.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 5

Popular struggles and Movements

Establishment of democracy in Nepal.

Meaning of the word democracy : - Democracy is the govt of the people, for the people and by the people.

The aims of movement for democracy in Nepal : The Nepalese movement for democracy arose with the specific objectives of reversing the kings orders that led to suspension of democracy. Establishment of democracy in Nepal :

- Democracy established in Nepal in 1990.
- King Birendra accepted it.
- King Gyanendra the new king of Nepal was not prepared to accept democratic rule after the death of king Birendra.
- The king dismissed the popularly elected Parliament.
- The movement of April 2006 was aimed at regaining popular control over the govt from the king and establish democracy means the govt of the people. All the major parties of parliament formed a seven party alliance. (SPA) and called for a four day strike in Kathmandu, the country's capital.
- On 21st April the protestors served an ultimatum to the king.
- 24th April 2006 was the last day of the ultimatum, the king was forced to concede all the demands.
- The SPA choose Girija Parasad Koirala as new Prime Minister of the interim govt. The parliament passed laws taking away most of the powers of the king. This struggle came to be known as Nepal's second movement for democracy.

Questions :

1. What was SPA?
2. What was the main demands of people of Nepal?
3. What was the aims of movement for democracy in Nepal?
4. When did the protestors served ultimatum to the king?
5. How was democracy established in Nepal?

Topic - 2

Sectional Interest groups and Public Interest Group meaning of Interest Groups.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Usually interest groups seek to promote the interests of a particular section or group of society.

Sectional Interest Groups :- They are sectional because they represent a section of society-workers, employees, business, persons, industrialists, followers of religion, caste group etc.

Features : Their principal concern is the betterment and well being of their members, not society in general.

Public Interest Groups : Public interest group promote collective rather than selective goods. They aim to help groups other than their own members.

Example : BAMCEF (Backward and minorities community employees federation).

Questions :

1. Distinguish between sectional interest groups and public interest groups?
2. Give one example of public interest group?
3. What is public welfare groups?
4. In what ways do pressure groups and movements exert influence on politics.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 6
Political Parties

Meaning : A political party is a group of people who come together to contest elections and hold power in govt and make public opinion among the people of country.

Topic : The role of Political Parties to Shape Public Opinion :

- They raise and highlight issues.
- The parties clear the policies of govt. to people.
- The parties clear the policies of govt. to people.
- Political parties give their ideas in favour and against the govt.
- Political parties give their ideas about the new laws made by the govt.
- In this way the political parties help to create public opinion in people. So it is necessary for people if they want to establish democratic govt. they have to analyze for and against democracy.

2. Topic : Challenges to Political Parties

Parties are for the working of democracy parties are the most visible face of democracy. It is natural that people blame parties, criticise them.

Parties have to face many challenges :-

1. Lack of Internal democracy :-
   1. Concentration of powers in one hand.
   2. Parties do not conduct internal election.
   3. Leaders assume greater power to make decision in name of party.
   - The second challenge of dynastic succession is related to the first one. Those who happen to be the leaders are in a position of unfair advantage to favour people close to them or even their family members.

Growing role of money and muscle power in parties :

1. The parties tend to nominate those candidates who have or can raise lots of money. In some cases parties support criminals.
- The fourth challenge is that very often parties **do not seem to offer a meaningful choice.** In order to offer meaningful choice, parties must be significantly different.
- There has been a decline in the ideological differences among parties.
- The difference among all the major parties on the economic policies have reduced.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

- Those who want really different policies have no option available to them.
- Lack of good leaders.

3. **Topic : Reforming the Political Parties**
   - The constitution was amended to prevent elected members from changing parties.
   - The supreme court passed an order to reduce the influence of money and criminals.
   - Now it is mandatory for every candidate who contests elections to file an affidavit giving details of his property.
   - The election commission passed an order making it necessary for political parties to hold their organizational elections and file their income tax returns.
   - A law is made to regulate the internal affairs of political parties.
   - The govt. should give money to parties for election so that every one who wants to participate in elections can do the same.

Questions :

1. What is public opinion?
2. Explain the role of political parties in making public opinion.
3. What is ruling party?
4. What is defection?
5. What is affidavit?
6. What are the various challenges faced by political parties.
7. What steps have been taken by the govt for the smooth functioning of political parties.
8. Give two merits of any political party.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 7
Outcomes of Democracy
Democracy is better than others

We felt that democracy is better because it :

- Promotes equality among citizens.
- Enhance the dignity of the individual
- Improves the quality of decision making.
- Provides a method to resolve conflicts.
- Allows room to correct mistakes.
- The countries which have formal constitutions, they hold elections and form govts.
- They guarantee rights of citizens.
- Democracy solves the social and political and economic problems of the country.

Topic - 2 : Accountable responsive and Legitimate Govt.

Accountable Govt. : Democracy is a accountable govt because it is the govt. of the people and made by people and for the people. The representatives elected by the people are responsible to them. If the people are not happy with the govt they can change the leaders in coming elections.

Responsive Govt. : A citizen who wants to know if a decision was taken through the correct procedures can find this out. She has the right and the means to examine the process of decision making. This type of transparency is not available in non democratic govts.

Legitimate Govt. : Democratic govt is legitimate govt.

It may be slow, less efficient, not always very responsive or clean. But a democratic govt is people's own govt's can not ignore the needs of people. So people wish to be ruled by representatives elected by them.

Questions :

1. Give the definition of democracy?
2. How democracy is better than other types of govt.?
3. How does democracy produce an accountable, responsive and legitimate govt.
4. "democracy depends on political equality". clarify this statement.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 8

Challenges to Democracy

Topic : 1 : Challenges to Democracy :

The serious challenges that democracy face in a country for smooth running of govt is called challenges. A challenge is not just any problem. We usually call only those difficulties a challenge which are significant and which can be overcome.

Challenges : At least one fourth of global is still not under democratic govt. The challenge for democracy in these parts of the world is very stark. These countries face the foundational challenge of making the transition to democracy and then instituting democratic govt.

- Most of the established democracies face the challenge of expression. This involves applying the basic principles of democratic govt across all the region, different social groups and various institutions.
- Challenge of deepening of democracy is faced by every democracy in one form or another. This involves strengthening of the institutions and practices of democracy. They should happen in such a way that people can realise their expectations of democracy.
- Elections are very expensive. The only rich persons can elect elections. The common man can not stand in elections. The govt should minimise the election expenditure. The govt should prepare budget for elections.

2. Topic : Political Reforms in Democracy

Meaning : All the suggestions or proposals about overcoming various challenges to democracy are called democracy reform or political reform.

- Reforming politics by making new laws.
- Carefully devised changes in law can help to discourage wrong political practices and encourage good ones.
- Any legal change must carefully look at what results it will have on politics. Sometimes the results may be counter productive. For example, many states have banned people who have more than two children from contesting panchayat elections. This has resulted in denial of democratic opportunity to many poor people and women.
- The best laws are those which empower people to carry out democratic reforms.
- The Right to Information Act is a good example of a law that empowers the people to find out what is happening in govt.
- Democratic reforms are to be brought about principally through political prac-

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

tice.

- Any proposal for political reform should think not only about what is a good solution but also about who will implement it and how.

Questions :

1. Name the two democratic countries who face challenge of expansion.
2. What is political reforms.
3. What is the importance of Right to Information Act.
4. What is the meaning of word 'challenge'.
5. How we can make political reforms in democracy.
6. Evaluate the main challenges faced by Indian democracy.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 1
Development

Development Different People, Different Goals.

- Different persons can have different development goals.
- What may be development for one may not be development for the other. It may be destructive for the other.

Income and Other Goals : More income; equal treatment; freedam; Job security; facilities for family; environment (healthy & secure).

Concept of National Development :

- World Development Report 2006, "In 2004 countries with per capita income of Rs. 453000 per annum are called rich or developed countries. Those with per capita income of Rs.37000 or less are called low income countries.
- Human Development Report 2006 published by UNDP, "Development is based on per capita income, educational levels of the people and their health status.

Sustainability : The regular process without harming the productivity of future generation and satisfy the need of present generation.

Sustainable Development : Development without damaging surrounding.

Average Income : Total income of the country divided by its total population. Also known as per capita income.

National Income : Sum of value of final goods produced within the country and income from foreign factors.

Infant Mortality Rate : The number of children that die before the age of one year as a proportion of 1000 live children born in that particular year.

Literacy Rate : The proportion of literate population in the 7 and above, age group.

Net attendance Ratio : the total number of children of age group 6-10 attending school as a percentage of total number of children in the same age group.

Questions :

1. What is the main criterion used by the World Bank in classifying different countries? What are the limitations of this criterion, if any?
2. In what respects is the criterion used by the UNDP for measuring development different from the one used by the world bank.
3. Why is the issue of sustainability important for development?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 2
Sectors of the Indian Economy

Sector of Economic Activities :

Primary Sector : When we produce a good by exploiting natural resources. It is an activity of the primary sector also known as agriculture and related sector.

Secondary Sector : Natural products are changed into others forms through ways of manufacturing. Also known as Industrial sector.

Tertiary Sector : These activities , by themselves, do not produce a good but they are an aid or a support for the production process. Also known as service sector.

Gross Domestic Production : the total value of final goods and services produced in each sector during a particular year provides the total production of the sector for that year.

Rising importance of the Tertiary Sector :

- In any country several services such as hospitals, educational institution, defence, transport, banks etc. are required.
- The development of agriculture and industry leads to the development of services such transport, banks are required.
- The development of agriculture and industry lends to the development of services such as transport, trade, storage.
- As income levels rise, certain sections of people start demanding many more services like tourism, shopping, private hospitals and private schools etc.
- Over the past decade or so certain new services such as those based on information and communications technology.

Disguised unemployment : More people engaged in than the people required for work. People do less work than their efficiency.

National Rural Employment Guarantee Act 2005

- 100 days work guarantee in year by the government.
- If government fails in its duty to provide employment. It will give unemployment allowances.
- Types of work given to improve production of land.

Organised Sector :

- Terms of employment are regular
- Registered by government

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

- Follows various rules and regulations
- It has some formal processes and procedures.

Unorganised Sector :

- Small and scattered units which are largely outside the control of the government.
- There are rules and regulations but these are not followed.
- Employment is not secure.

Questions :

1. Do you think the classification of economic activities into primary, secondary and tertiary is useful? Explain .
2. How is the tertiary sector different from other sectors? Illustrate with a few examples.
3. What do you understand by disguised unemployment? Explain with an example each from the urban and rural areas.
4. "Tertiary sector is not playing any significant role in the development of Indian Economy". Do you agree? Give reason in support of your answer.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 3
Money and Credit

Barter System : Goods are exchanged without use of money.

Double Coincidence of wants : In exchange of goods both parties have to agree to sell and buy each others commodities. In a barter system double coincidence of wants is an essential feature.

Medium of Exchange : Money act as an intermediate in the exchange process. Currency is authorised by the government as medium of exchange.

- People deposit extra cash with the banks by opening the bank account in their name.
- The deposits in the bank accounts can be withdrawn on demand, these deposits are called demand deposits.
- A check is a paper instructing the bank to pay a specific amount from the persons account to the person in whose name the cheque has been made.

Loan Activities of Banks :

- Banks in India these days bold about 15% of their deposits as cash.
- Kept as provision to pay the depositors who might come to withdraw money from the bank on any given day.
- Bank use the major portion of the deposits to extend loans.
- Difference between the interest rates is the main source of income for banks.

Terms of Credit :

- Interest rate
- Collateral
- documentation requirement.
- the mode of repayment.

  the varying terms of credit in different credit arrangements.

Formal Sector Credit in India

Loans from banks and co-operatives Functions of Reserve banks.

- Issues currency notes on behalf of the central government.
- RBI monitors the banks are actually maintaining cash balance.
- RBI collect information from banks, how much they are lending to whom, at what interest rate etc.

Informal Sector Loans

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The informal lenders, traders, employers, relatives and friends etc.

- There is no organisation which supervise the credit activities of lenders.
- They can lend at what ever interest rate they choose.
- Their is no one to stop then from using unfair means to get their money back.

Questions :

1. How does money solve the problem of double coincidence of wants? Explain with an example.
2. What is check? How payments made with cheques? Explain with example.
3. How does RBI control the functioning of other banks? Why it is important
4. Why people take more loan from Informal Sector.
5. Compare the employment conditions prevailing in the organised and unorganised sectors.
6. Explain the objective of implementing the NREGA 2005.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 4

Globalisation and the Indian Economy

VArious ways By which MNCs set up or control production in other countries :

- Set up production jointly with some of the local companies. Joint production provides money for additional investment and latest technology for production.
- To buy up local companies and then expand production.
- Place orders for production with small producers.
- By setting up partnerships with local companies, by using the local companies for supplies, by closely competing with the local companies or buying them up, MNCs are exerting a strong influence on production at these distant locations. As a result, production in these widely dispersed locations is getting interlinked.

Foreign Trade and Integration of Markets :

- Exchange of goods - purchase and sale - across geographical boundaries of the countries.
- Goods travel from one market to another.
- Choice of goods in the market rises.
- Prices of similar goods in the two markets tend to become equal.
- Producers in the two countries closely compete against each other even though they are separated by thousand of miles. Thus foreign trade results in connecting the markets or integration of markets in different countries.

Trade Barriers and its importance :

- Various restrictions which are used by the government to increase or decrease Foreign Trade.
- Government uses trade barriers to increase or decrease Foreign Trade and to decide what kinds of goods and how much of each, should come into the country.

Special Economic Zones :

- Setting up of industrial zones by the central and state governments to attract Foreign Companies to invest in India which have world class facilities, electricity, water, roads, transport, storage, recreational and educational facilities.

Impact of Globalisation in India :

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

- Greater competition among producers - both local and foreign producers has been of advantage to consumers.
- There is greater choice before these consumers who now enjoy improved quality and lower prices for several products.
- Foreign investment has increased.
- Increased competition has encouraged top Indian Companies to invest in newer technology and production methods and raise their production standards.
- Globalisation has enabled some large Indian Companies to emerge as Multinational.
- Created new opportunities for companies providing services particularly those involving Information Technology.

Questions :

1. What are the various ways in which multinational companies set up, or control, production in other countries?
2. What is Foreign Trade? How does Foreign Trade lead to integration of markets across countries?
3. What are trade barriers? Why does Government uses Trade Barriers?
4. What are special economic zones? Why is the government setting up special economic zones?
5. What is the impact of Globalisation in India?

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Lesson No. 5
Consumer Rights

Rights of Consumers :

Rights which are provided by law : -

- Right to safety
- Right to be informed
- Right to choose
- Right to be heard
- Right to seek redressal
- Right to consumer education.

Factors causing exploitation of Consumers :

- Limited information
- Limited supplies
- Limited competition
- Low literacy

Duties of Consumers :

- To purchase quality marked products such as ISI, AGMARK etc.
- To ask for cash memo for the items purchased whenever possible.
- To make complaint for genuine grievances consumers must know their rights and must exercise them.

Demerits of Consumer Redressal Process :

- The Consumer Redressal Process is becoming cumbersome expensive and time consuming.
- Many a time, consumers are required to engage lawyers. These cases require time for filling and attending the court proceedings etc.
- In most purchases cash memos are not issued hence evidence is not easy together.
- Most purchases in the market are small retail sales.
- The enforcement of laws that protect workers, especially in the unorganised sectors is weak.
- Rules and regulations for working of markets are often not followed.

Consumer Protection Act - 1986 (COPRA)

- To protect and promote the interest of consumers.
- Under COPRA a three-tier quasi-judicial machinery at the district, state and national levels is set up for redressal of consumer disputes.
- The district level court deals with the cases involving claims upto Rs. 20 lakhs; The State level courts between Rs. 20 lakhs and Rs. 1 crore and the national level court deals with cases involving claims exceeding Rs. 1 crore.

Questions :

1. Mention the Rights to consumers and write two sentences on each.
2. Explain the factors which cause exploitation of consumers.
3. Describe some of your duties as consumers if you visit a shopping complex in your locality.
4. Mention the demerits of consumer redressal process.
5. Explain Consumer Protection Act - 1986.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

CHANDIGARH REGION

STUDY MATERIAL FOR BRIGHT STUDENTS

Prepared Under the guidance of

Principal

SH. S. K. SHARMA

K.V. I , Patiala

Class - X , 2008-09

SUBJECT - SOCIAL SCIENCE

CO-ORDINATOR : Mrs. RAJWINDER KAUR SEKHON

PREPARD BY :-

Mrs. S. BALI	TGT (S, ST)	K. V. 3 PATIALA
Mrs. J. J. KAUR	TGT (S. ST.)	K. V. 2 PATIALA
Mrs. K. CHEEMA	TGT (S. ST.)	K. V. 1 PATIALA
Mrs. KRISHNA	TGT (S.ST.)	K. V. 2 PATIALA
Mr. NARASH KUMAR	TGT (S.ST.)	K. V. 2, PATIALA
Miss. VANDANA	TGT (S.ST.)	K. V. 1, PATIALA
Miss AMANJIT KAUR	TGT (S. ST.)	K. V., NABHA.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

INDEX

S. No.	NAME OF LESSION	PAGE No.	
	HISTORY	**Hindi**	**English**
1.	Rise of Nationalism In Europe	1	34
2.	Nationalism In India	2	35
3.	The Making Of A Global World	3	36
4.	The Ag Of Industrialization	4	38
5.	Print Culture And The Modern	5	39
	GEOGRAPHY		
1.	Resources And Development	7	40
2.	Water Resource	8	41
3.	Agriculture	9	43
4.	Mineral And Energy Resources	10	44
5.	Manufacturing Industries	11	46
6.	Life Line Of National Economy	13	48
	CIVICS		
1.	Power Sharing	15	50
2.	Federalism	16	51
3.	Democracy And Diversity	18	53
4.	Gender, Religion And Caste	19	54
5.	Popular Strength And Movements	21	56
6.	Political Parties	22	58
7.	Out Comes Of Democracy	24	60
8.	Challenges Of Democracy	25	61
	ECONOMICS		
1.	Development	26	63
2.	Sectors Of The Indian Economy	27	64
3.	Money And Credit	29	66
4.	Globalization And The Indian Economy	30	68
5.	Consumer Rights	32	70

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com